ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय ®

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 1 अंक : 3 फरवरी - मार्च 2011 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

शिवरात्रि	डा. महेश पारासर	4
आपके प्रश्नों के समाधान	डा. महेश पारासर	5
आपकी वास्तु समस्या का समाधान	पं. अजय दत्ता	5
वास्तु एवं फेंगशुई	डा. रचना भारद्वाज	6
वसंत पंचमी	डा. श्रीमती शोनू मेहरोत्रा	7
महाशिवरात्रि व्रत 3 मार्च 2011	डा. कविता के अगरवाल	8
कैसा हो विद्यार्थियों का अध्ययन कक्ष?	श्रीमती रेनू कपूर	9
रुद्राक्ष एक–काम अनेक	श्रीमती रेखा जैन	10
लाल किताब से जानिये साल 2011 का हाल	पं. अजय दत्ता	11
मास्टर बेडरूम	पं. दयानन्द शास्त्री	12
होली "बुराई पर भलाई की जीत"	पवन कुमार मेहरोत्रा	12
बुजुर्गो की अध्यात्म सेवा	परमेश्वर दत्त मिश्रा	13
गोबर से रोग निवारण	डॉ. सतीश शर्मा	14
सूर्यनमस्कार ऊँ प्रणामासन	योगाचार्य प्रभुदयाल गुप्ता	14
अलसी के गुण बेशुमार	श्रीमती पूनम अजय दत्त	15
माला के 108 मनको का अर्थ	सुरेश अग्रवाल	15
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	16–17
वाणी–दोष	विजय शर्मा	18
पूजा की सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा ए. डी. ऑफसैट, 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर 6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

शिवरात्रि

फाल्गुन कृष्ण–पक्ष की चतुर्दशी भारतीयों में **'शिवरात्रि'** के नाम से प्रसिद्ध है और वह भगवान् शंकर की आराधना का प्रमुख दिन हैं विश्व की तीन सर्वोच्च शक्तियों में अन्यतम शिव हैं और वेदों से लेकर भाषा ग्रन्थों तक में शिव की महत्ता और गरिमा के सम्बन्ध में इतना वर्णन किया गया है कि यदि उसक एकत्र संग्रह हो तो महाभारत जैसी सहस्त्रों नहीं तो सैकडों पुस्तकें अवश्य ही तैयार हो सकती हैं। प्रस्तुत पर्व उन्हीं देवाधिदेव भगवान् शंकर का प्रिय पर्व है।

रात्रि की क्यों?

अन्य देवों का पूजन जबकि दिन में ही होता है तब भगवान शंकर को रात्रि ही क्यों प्रिय हुई और वह भी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि ही क्यों? यह बात सुविदित है कि भगवान् शंकर संहार शक्ति और तमोगुण के अधिष्ठाता हैं अतः तमोमयी रात्रि से उनका स्नेह स्वाभाविक ही है। रात्रि संहार काल की प्रतिनिधि है, उसका आगमन होते ही सर्वप्रथम प्रकाश का संहार, जीवों की दैनिक कर्म–चेष्टाओं का संहार और अन्त में निद्रा द्वारा चेतनता का ही संहार होकर सम्पूर्ण विश्व में निद्रा द्वारा चेतनता का ही संहार होकर सम्पूर्ण विश्व संहारिणी रात्रि की गोद में अचेतन होकर गिर जाता है। ऐसी दशा में प्राकृतिक दृष्टि से शिव का रात्रिप्रिय होना सहज ही हृदयंगम हो जाता है। यही कारण है कि भगवान् शंकर की आराधना न केवल इस रात्रि में ही किन्तु सदैव प्रदोष (रात्रि प्रारम्भ होने पर) समय में की जाती है।

शिवरात्रि का कृष्ण–पक्ष में ही आना भी साभिप्राय ही है। शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा पूर्ण होता है और कृष्ण–पक्ष में क्षीण। उसकी बृद्धि के साथ–साथ संसार के सम्पूर्ण रसवान् पदार्थो में वृद्धि और क्षय के साथ–साथ उनमें क्षीणता स्वाभाविक एवं प्रत्यक्ष है। क्रमशः घटते–घटते वह चंद्र अमावस्या को बिलकुल क्षीण हो जाता है। चराचर के यावन्मात्र मनों के अधिष्ठाता उस चन्द्र के क्षीण हो जाने से उसका प्रभाव **'अण्डपिण्डवाद'** के अनुसार सम्पूर्ण भूमण्डल के प्राणियों पर भी पड़ता है और उन्मना जीवों के अन्तःकरण में तामसी शक्तियों प्रबुद्ध होकर अनेक प्रकार के नैतिक व सामाजिक अपराधों का कारण बनती हैं। इन्हीं शक्तियों का अपर नाम आध्यात्मिक भाषा में भूत–प्रेतादि है ओर शिव को इनका नियामक माना जाता है। दिन में यद्यपि जगदात्मा सूर्य की स्थिति से आत्मतत्त्व की जागरुकता के कारण ये अपना विशेष प्रभाव नहीं दिखा पातीं किन्तु चन्द्रविहीन अन्धकारमयी रात्रि के आगमन के साथ ही वे अपना प्रभाव दिखाने लग जाती हैं।

इसलिए जैसे पानी आने से पहले ही पुल बांधा जाता है, इसी प्रकार इस चन्द्रक्षय तिथि के आने से सद्यःपूर्व ही उन सम्पूर्ण तामसी बृत्तियों के उपशमनार्थ इन वृत्तियों के एकमात्र अधिष्ठाता भगवान् आशुतोष को आराधना करने का विधान शास्त्रकारों ने किया है यही विशेषतया कृष्ण चतुर्दशी की ही रात्रि में शिव आराधना का रहस्य है।

परन्तु यह कृष्ण चतुर्दशी तो प्रत्येक मास में आती है, वे 'शिवरात्रि' क्यों नही कहलातीं, फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी में ही क्या विशेषता है– जरा यह रहस्य भी लगे हाथों समझ लेना चाहिए। जहाँ तक प्रत्येक मास की चतुर्दशी के शिवरात्रि कहलाने का प्रश्न है, तो निश्चय ही वे सभी शिवरात्रि ही हैं और पंचागों में उन्हें इसी नाम से स्मरण भी किया ही जाता है। अधिक फाल्गुन की यह शिवरात्रि **'महा शिवरात्रि'** के नाम से पुकारी जाती है। हमारी पूर्वोल्लिखित स्थापना के अनुसार जिस प्रकार क्षयपूर्ण तिथि (अमावस्या) के दुष्पप्रभाव से बचने के लिए उससे ठीक एक दिन पूर्व चतुर्दशी को यह उपासना की जाती है उसी प्रकार क्षय होते हुए वर्ष के अन्तिम मास से ठीक एक मास पूर्व ही इसका विधान शास्त्रों में मिलता है जो कि सर्वथा युक्तिसंगत है। सीधे शब्दों में हम कहे तो कह सकते है कि यह पर्व वर्ष के उपान्त्य मास और उस मास की भी उपान्त्य रात्रि में मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त हेमन्त वात्य रुपी प्रखर हंसिया सम्भाले, वनों पर्वतों को शुष्क और उजाड़ बनाने वाला प्रकृति का संहारकारी रुप इसी मास में प्रकट होता दिखलाई पड़ता है जिसका सामन्जस्य शिव के रौद्र रुप से सर्वथा स्पष्ट ही है। अथच रुद्रों के एकादश संख्यात्मक होने के कारण भी यह पर्व 11 में मास में ही सम्पन्न होता है।

संहार के अधिष्ठाता होते हुए भी भगवान शंकर कहलाते शिव=कल्याण कारक ही हैं। इसका कारण यह है कि सर्वदा लय में ही उतपत्ति के बीज छिपे रहते हैं, बिना एक वस्तु के विनाश हुए संसार में दूसरी कभी उत्पन्न नहीं होती। अतः जबकि उत्पत्ति के लिए संहार अनिवार्य है तो संहार कार्य करके शिव संसार का कल्याण ही तो करते हैं, इसीलिए वे शिव हैं।

महेश पारासर

पाठकों के पत्र

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार।

मैं पिछले 4 वर्षों से आपकी पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका का प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक व संग्रहणीय होता है। आशा करता हूँ कि आप भविष्य में भी ऐसे ही तथ्यपूर्ण आलेख प्रकाशित करते रहेगें।

श्री एस. एन. अग्रवाल–आगरा।

आदरणीय डा. पारासर जी,

सादर चरण स्पर्श ।

आपकी भविष्य दर्शन पत्रिका के अंको की साज सज्ज दिन प्रति दिन आकर्षक होती जा रही है। आपकी पत्रिका के सम्पादकीय भी बहुत ही रूचिपूर्ण व सारगर्भित होते है। पत्रिका का ऐसी ही स्तर बनायें रखें। मेरी शुभकामनाऐं सदैव आपके साथ है। सतीश शर्मा– मथुरा।

अमृत वचन

अन्धकार शाश्वत है,
प्रकाश को लाना पड़ता है।
इसी प्रकार अज्ञान शाश्वत है,
ज्ञान को प्राप्त करना पड़ता है।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– मेरी नौकरी कब लगेगी। उपाय बतायें।

उमेश शर्मा– आगरा

उत्तर– आपकी सूर्य की महादशा चल रही है। आपकी कुण्डली में सूर्य उच्च का होकर दशम भाव में स्थित है। आपकी नौकरी अगस्त 2010 के बाद लगेगी। आप एक पुखराज रत्न धारण करें तथा शनि से सम्बन्धित दान करते रहें।

प्रश्न– मेरी आर्थिक व मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। तलाक हो चुका है। मेरे लिए उपाय बतायें।

सुनीता शर्मा – अलीगढ़

उत्तर– आपकी कुण्डली में राहू की महादशा चल रही हैं। आप एक लहसुनिया रत्न धारण करें। शनि स्त्रोत्र का रोजाना तीन बार पाठ करें। राहू से सम्बन्धित दान करती रहें। मोती और पुखराज का लॉकेट गले में धारण करें। गुरूवार का व्रत रखें। खानपीन पर नियन्त्रण रखें। सूर्य को रोजाना जल अवश्य अर्पित करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– मेरे पुत्र के सिर मे हर समय दर्द रहता है। पिछले कुछ वर्ष से दर्द के साथ ही वह बेहोश हो जाता है। अपने पुत्र की कुण्ड़ली व घर का नक्शा प्रेषित कर रहा हूँ। यथासम्भव उपाय बतायें। **किशन सिंह–मुरादाबाद**

समाधान– आपके घर में उत्तर पूर्व ईशान कोण में शौचालय स्थित है। ईशान कोण में शौचालय होने से सन्तान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। यहॉ शौचालय स्थित होने से मानसिक तनाव तथा ब्रेन टयूमर के केस कई घरों मे पाये गये है। आपको सलाह दी जाती है कि यदि सम्भव हो तो यहाँ से शौचालय बदलाव लें। पुत्र को माणिक तथा मोती घारण करवायें। घर में वास्तु दोष निवारक यंत्र स्थापित करवायें। आपके तुरन्त लाभ मिलेगा।

समस्या– मेरा काम धंधा धीरे–धीरे कम होता जा रहा है आर्थिक संकट बढ़ते जा रहें हैं। काई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो रहा। उपाय बताकर अनुग्रहीत करें। **आकाश वर्मा– मथुरा।**

समाधान– आपके घर में उत्तर की दीवार से सट कर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं और फिर वह धूम कर ब्रह्म स्थल की ओर आ रही हैं। ऐसी स्थिति आपको हमेशा कर्जदार बना कर रखेगीं और आर्थिक संकट सदैव बने रहेगें। यदि सम्भव हो तो आप घर की सीढियों को दक्षिण पश्चिम की ओर स्थानान्तरित करें। घर के ईशान कोण में मंदिर बनायें। प्रत्येक अमावस्या को घर बुलाकर ब्राह्मण को भोजन करवायें। राहू से सम्बन्धित दान करें। दिसम्बर 2010 के बाद समय परिवर्तन होगा। **पं. अजय दत्ता**

मो. 9319221203

वास्तु एवं फेंगशुई

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

सृष्टि का निर्माण मूल पाँच तत्वों से माना गया है। ये पाँच तत्व हैं पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल एवं आकाश। इन पाँचों तत्वों का सजीव समावेश मनुष्य में है। इस पृथ्वी पर जो भी किया जाता है, सूक्ष्म हो या स्थूल ये पाँच तत्व ही कारक बनते हैं।

ये पाँचों तत्व प्राकृतिक है। प्राणियों में मानव को श्रेष्ठ माना गया है। मानव ने अपनी कुशाग्र बुद्धि द्वारा इन पाँच तत्वों के सामंजस्य से आज के आधुनिक युग को ऐश्वर्यशाली युग में बदल दिया है। परन्तु जब भी मानव इन पाँच तत्वों के साथ उनके नैर्सगिक गुणों को लेकर खिलवाड़ करता है, तब उसे कई प्रकार के विघटनों, कष्टों एवंम् दुष्परिणामों का सामना करना पड़ता है। यदि मनुष्य प्रकृति के अनुरुप कार्य करते हुये जीवन यापन करता है तो वह स्वास्थ्य एवंम् दीर्घायु प्राप्त करता है।

भारत में वास्तुशास्त्र का लम्बा इतिहास है। ऋग्वेद के मत्सय पुराण में अठारह वास्तु शास्त्रों का उल्लेख है। सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र प्राकृतिक नियमों पर आधारित है।

वास्तुशास्त्र के नियमों का पालन करने से देखा गया है कि हम प्रकृति के साथ उसके नियमों के अन्तर्गत रहते है। ऐसा करने पर प्रकृति हमें अपार सुख देती है। वास्तु नियमों का पालन करने से भवन में रहने वाला व्यक्ति सुखी, धार्मिक, धनवान एवंम् रोगमुक्त रहता है।

वास्तु नियम एवंम् सिद्धान्तों का प्रतिपादन भी पूर्णतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण युक्त है। इसके पीछे सुदृढ़ वैज्ञानिक आधार भी है। वास्तु के अनुसार मनुष्य को सिर दक्षिण दिशा में करके सोना चाहिये। इसके पीछे एक वैज्ञानिक कारण है। पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव व दक्षिण ध्रुव व में चुम्बकीय गुण है। जिसे हम नार्थ पोल व साऊथ पोल कहते हैं। उसी प्रकार मनुष्य के ऊपर सिर के भाग को उत्तरी ध्रुव व पैरों के भाग को दक्षिणी ध्रुव कहते हैं। चुम्बकीय आर्कषण हमेशा उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव की ओर होता है। इसीलिये जब हम सिर यानि उत्तरी ध्रुव दक्षिण की ओर करके सोते हैं तो परस्पर आकर्षण होने के कारण हमें चुम्बकीय तरंगों का प्रभाव मिलेगा जिसके कारण हमारे शरीर का रक्त संचार उचित रहेगा। तथा हमारे मस्तिष्क में किसी प्रकार का तनाव नहीं रहेगा व हमें गहरी निन्द्रा आयेगी।

वास्तु द्वारा किसी व्यक्ति का भाग्य तो नहीं बदला जा सकता किन्तु घर या व्यवसाय को खुशहाल व समृद्धिशाली अवश्य बनाया जा सकता है।

वास्तु के नियमों का पालन करने से हमें अधिक ताजी वायु ,सूर्य की ऊर्जा मिलती है। साथ ही साथ पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति भी मनुष्य की ऊर्जा को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करती है। वास्तु के नियम, स्थान को स्वच्छ रखने पर भी अत्यधिक ध्यान देते हैं। वास्तु द्वारा रंगों का चयन वातावरण को अनुकूल बना देता है।

चीनी कला फेंगशुई भी इसी प्रकार घर के अन्दर के वातावरण को अनुकूल बनाने में बहुत सहायक है।

चीनी कला फेंगशुई व भारतीय वास्तु पद्धति में यद्यपि कई मतभेद हैं क्योंकि दोनों ही पद्यतियाँ अपनी–अपनी भगौलिक परिस्थितियों के अनुसार हैं परन्तु फिर भी हम फेंगशुई की वस्तुओं को घर में लगा कर एक स्वस्थ, निर्मल व पवित्र वातावरण उत्पन्न कर सकते हैं तथा समृद्धि को बढ़ाते हैं। जैसे फेंगशुई के अनुसार दरवाजे पर घण्टियाँ लगाना बहुत ही शुभ है ये आपके घर में सद्भाग्य के प्रवेश का सूचक है। तीन भाग्यशाली सिक्के लटकाने से घर में सम्पत्ति आती है।

इसी प्रकार तीन टाँग का मेढ़क मुँह में सिक्के लिये हुये, धन आगमन का प्रतीक है। स्फटिक के गोले सम्बन्धों को मधुर बनाते हैं। अगरबत्ती व धूपबत्ती का प्रयोग नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है। इस प्रकार फेंगशुई, बहुत ही आसानी से अनके उपायों द्वारा आवास तथा कार्य स्थल से नकारात्मक ऊर्जा को बाहर कर सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है। इसी प्रकार पिरामिड भी सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने में उपयोग किये जा सकते हैं।

अतः वास्तु के नियमों का पालन करते हुये तथा फेंगशुई के उपायों को मानते हुये हम अधिक सुखी व समृद्ध जीवन व्यतीत कर सकते है। ❋❋❋

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
भविष्य दर्शन®
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2850666 ❋❋❋

वसंत पंचमी

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445

बसंत पंचमी ऋतुराज वसंत के आगमन का प्रथम दिन माना जाता है। हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों में वसंत को ऋतुराज अर्थात सब ऋतुओं का राजा माना गया हैं। बसंत पंचमी वसंत ऋतु का एक प्रमुख त्यौंहार है। बसंत पचंमी का त्यौंहार हृदय के एक आनंद और खुशी का प्रतीक कहा जाता है। बसंत में प्रकृति का रुप एवं सौंदर्य से निखर उठता हैं। बसंत पंचमी का पर्व उत्तरी भारत एवं पश्चिम बंगाल में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता हैं।

होली का शुभारंभ भी बसंत पंचमी से ही होता हैं। इस दिन प्रथम बार गुलाल उड़ायी जाती है। उत्तर प्रदेश में इसी दिन से काग उड़ाना आरम्भ करते है जिसका अंत फागुन की पूर्णिमा को होता है। भगवान श्रीकृष्ण इस त्यौंहार के अधिदेवता है इसलिए ब्रजप्रदेश में राधा एवं कृष्ण का आनंद–विनोद बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इसी दिन किसान नए अन्न में घी, गुड़ मिलाकर अग्नि तथा पितरों को तर्पण करते है।

पुराणों के कथानुसार भगवान श्रीकृष्ण ने इस दिन सरस्वती पर प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया था। इसीलिए तथा शिक्षा प्रेमियों के लिए माँ सरस्वती के पूजन का महान पर्व हैं। चरक संहिता में लिखा है कि इस नक्षत्र में स्त्री रमण तथा वन–विहार करना चाहिए कामदेव वसंत के अनन्य सहचर हैं।

इसलिए कामदेव व रति की भी इस तिथि को पूजा करने का विधान है।

पूजनविधि–विधान– यह त्यौहार माघ मास के शुक्लपक्ष की पंचमी को मनाया जाता है। इस दिन नित्य के नैमित्तिक कार्य करके शरीर पर तेल से मालिश करें। फिर स्नान के तत्पश्चात पीले वस्त्र पहनकर भूषण धारण करें। इस दिन ब्राह्मणों को पीले चावल, पीले वस्त्र दान करने पर विशेष फल की प्राप्ति होती है। इस दिन विष्णु भगवान के पूजन का माहात्म्य बताया गया हैं एवं ज्ञान की देवी सरस्वती के पूजन का विशेष विधान है। कलश की स्थापना करके गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य आदि से षोडशोपचार विधि से पूजन करें। इस दिन भगवान गणेश, सूर्य , विष्णु और शिव को गुलाल लगाना चाहिए। गेंहूँ एवं जौ की बालियां भी भगवान को अर्पित करने का विधान है। सरस्वती पूजन के पश्चात शिशुओं को तिलक लगाकर अक्षर ज्ञान प्रारंभ करने की भी प्रथा है।

कथाः– जब प्रजापति ब्रह्मा ने भगवान विष्णु की आज्ञा से सृष्टि की रचना की तो वे उसे देखने के लिए निकले। उन्होनें सर्वत्र उदासी देखी। सारा वातावरण उन्हें ऐसा लगा जैसे किसी के पास वाणी ही न हो। सुनसान सन्नाटा, उदासी भरा वातावरण देखकर उन्होंने इसे दूर करने के लिए अपने कमंडल से चारों तरफ जल छिड़का। उन जलकणों के वृक्षों पर पड़ने से वृक्षों से एक देवी प्रकट हुई जिनके चार हाथ थे उनमें से जो दो हाथों में वह वीणा पकड़े हुए थी तथा उनके शेष दो हाथों में, एक में पुस्तिका और दूसरे में माला थी। संसार की मूकता और उदासी भरे वातावरण को पूरा करने के लिए ब्रह्माजी ने देवी से वीणा बजाने का आग्रह किया। वीणा के मधुर स्वर से जीवों को वाणी मिल गयी। सप्तविध स्वरों का ज्ञान प्रदान करने के कारण इनका नाम सरस्वती पड़ा। वीणावादिनी सरस्वती संगीतमयी आहलावित जीवन–जीने की प्रेरणा हैं। वह विद्या संगीत और बुद्धि की देवी मानी गयी हैं। माँ सरस्वती की पूजा में मानव कल्याण का समग्र जीवन दर्शन निहित हैं। इसीलिए बसंत पंचमी को इनका विधि–विधान से पूजन अवश्य करना चाहिए।

❋❋❋

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

महाशिवरात्रि व्रत 3 मार्च 2011

डा. (श्रीमती) कविता के अगरवाल
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ
मो.- 9897135686, 9219577131

शिवरात्रि शिव प्रिय रात्रि है। इस दिन प्रत्येक योगी, साधक गुरु–शिष्य, नर–नारी, गृहस्थ शिव पूजन अवश्य करते है। इस व्रत को सम्पन्न करने पर जीवन में सुख सौभाग्य की वृद्धि होती है और आश्चर्यजनक फल उसी क्षण मिलने लगता है। शिवरात्रि का व्रत फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी को होता है कुछ लोग चतुर्दशी के दिन भी इस व्रत को करते है। माना जाता है कि सृष्टि के प्रारम्भ में इसी दिन मध्य रात्रि भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रुप में अवतरण हुआ था। प्रलय के वेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुऐ ब्रह्माण्ड को तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर देते है इसीलिये इसे महाशिवरात्रि अथवा कालरात्रि कहा गया है। बहुत से लोग महाशिवरात्रा को शिव–विवाह के रुप में भी मनाते है।

व्रत कैसे करें– इसदिन प्रातः काल स्नान ध्यान से निवृत्त होकर व्रत रखना चाहिये। पत्र–पुष्प तथा सुन्दर वस्त्रों से मंडप तैयार करके सर्वतोभद्र की वेदी पर कलश की स्थापना के साथ–साथ गौरी शंकर की स्वर्ण मूर्ति और नन्दी की चाँदी की मूर्ति रखनी चाहिये। यदि इस मूर्ति का नियोजन न हो सके तो शुद्ध मिट्टी से शिवलिंग बना लेना चाहिये। कलश को जल से भरकर रोली, मौली, चावल, पान सुपारी, लौंग, इलायची, चंदन, दूध, दही, घी, शहद, कमलगट्टा, धतूरा, विल्वपत्र आदि का प्रसाद शिवजी को अर्पित करके पूजा करनी चाहिये। रात को जागरण करके ब्राह्माणों से शिव की स्तुति का पाठ कराना अथवा रुद्र अभिषेक करवाना चाहिये। तथा स्वंय निर्मल मन से ऊँ नमः शिवाय का जाप करते रहना चाहिये।

इस जागरण में शिवजी की चार आरती का विधान जरुरी है। इस अवसर पर शिव पुराण का पाठ मंगलकारी है। दूसरे दिन प्रातः जौ, तिल, खीर तथा बेलपत्रों का हवन करके ब्राह्मणों को भोजन कराकर व्रत का समापन करना चाहिये। इस विधि–विधान तथा स्वच्छ भाव से जो भी यह व्रत रखता है, भगवान शिव प्रसन्न होकर उसे अपार सुख–सम्पदा प्रदान करते है।

भगवान शंकर पर चढ़ाया गया नैवेद्य खाना निषिद्ध है। ऐसी मान्यता है कि जो इस नैवेद्य को खा लेता है, वह नरक के दुःखों का भोग करता है। इस कष्ट के निवारण के लिये शिव की मूर्ति के पास शालिग्राम की मूर्ति रहना अनिवार्य है। यदि शिव की मूर्ति के पास शालिग्राम हो तो नैवेद्य खाने का कोई दोष नहीं होता।

पदार्थ शिवलिंग के प्रयोग– 1. कस्तूरी और चन्दन से बने शिवलिंग के रुद्राभिषेक से शिव–सायुज्य होता है।

2. फूलों से बने शिवलिंग पूजन से भू–सम्पत्ति प्राप्त होती है।

3. जौ, गेहूँ, चावल, तीनों का आटा समान भाग मिलाकर जो शिवलिंग बनाया जाता है, उसकी पूजा स्वास्थ्य श्री व संतान देती है।

4. मिश्री से बने शिवलिंग की पूजा रोग से छुटकारा देती है।

5. सुख शांति की प्राप्ति के लिये चीनी की चाशनी से बने शिवलिंग का पूजन होता है।

6. दही को कपड़े में बाँधकर निचोड़ देने के पश्चात उससे जो शिवलिंग बनता है, वह लक्ष्मी और सुख देने वाला होता है।

7. किसी भी फल को शिवलिंग के समान रखकर उसका रुद्राभिषेक करने से फलवाटिका में अधिक फल आता है।

8. दूर्वा को शिवलिंगाकार गूँथकर उसकी पूजा करने से अकाल मृत्यु का भय दूर होता है।

9. कपूर से बने शिवलिंग का पूजन भक्ति व मुक्ति देता है।

10. लोहे से बने शिवलिंग का पूजन सिद्धि देता है।

11. मोती के शिवलिंग का पूजन भाग्य–वृद्धि करता है।

12. स्वर्ण निर्मित शिवलिंग समृद्धि का वर्धन करता है।

13. चाँदी के शिवलिंग का रुद्राभिषेक धन–धान्य बढाता है।

14. लहसुनिया शिवलिंग का रुद्राभिषेक शत्रुओं का नाशक होता है, विजय दाता होता है।

15. स्फटिक से बने शिवलिंग का रुद्राभिषेक मनुष्यों को अभीष्ट कामनाएं प्रदान करता है एवं सभी पाप दूर हो जाते है।

16. पारद से बने शिवलिंग का पूजन सर्वकामप्रद, मोक्षप्रद,

शेष पेज 20 पर.....

वास्तुदोष, आर्थिक, व्यापारिक, मानसिक, शारीरिक, शिक्षा, दुर्घटना, जायदाद, वैवाहिक, घरेलू समस्याओं का यंत्र/मंत्र/रत्न द्वारा समाधान हेतु मिलें

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

डॉ. महेश पारासर ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

कैसा हो विद्यार्थियों का अध्ययन कक्ष?

श्रीमती रेनू कपूर
वास्तु ऋषि
9219413439, 9837755255
E-mail.vastumandiram@rediffmail.com

विद्या ददाति विनयम् विनाद्याति पात्तताम्।
पात्तत्वा धममाप्नोति धनात् धर्मम् ततो सुखम्।।

कहा जाता है कि विद्या से विनयशीलता, विनयशीलता से योग्यता, योग्यता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुखों की प्राप्ति होती है। सभी माता पिता अपनी संतान को सुखी और समृद्ध बनाने के लिये अच्छी से अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करते हैं क्योंकि विद्या के द्वारा ही अजीविका प्राप्त कर व्यक्ति योग्यता और ज्ञान की प्राप्ति करता हैं तभी वह नीतिवान और चरित्रवान बनता है। बच्चों के विद्या अध्ययन में वास्तु शास्त्र किस प्रकार सहयोग करता है इसके कुछ महत्वपूर्ण वास्तु नियम निम्न प्रकार है–

1. वास्तुशास्त्र में माना गया है कि पूर्व दिशा के स्वामी सूर्य भगवान वेद व शास्त्रों के ज्ञाता है जिन्होनें अपने शिष्य हनुमान को ब्रह्मांड में चलते–चलते ही सम्पूर्ण वेद शास्त्रों का ज्ञान दिया था इसी कारण पूर्व दिशा को सुख, स्वास्थय, उन्नति तथा शिक्षा का कारक दिशा माना जाता है। अतः विद्या अध्ययन के समय पूर्व दिशा की ओर मुख करके किया गया अध्ययन बच्चों को एकाग्रता प्रदान करता है।

2. वास्तुशास्त्रानुसार ज्ञानवर्धक उत्तर–पूर्व दिशाओं में बने अध्ययन कक्ष में मेज पूर्वी दीवार से लगाकर न रखें, पश्चिमी दीवार से लगाकर कुर्सी मेज रखनी चाहिये जिससे मेज के आगे खुला स्थान हो जायेगा जो विद्यार्थी को उज्जवल भविष्य में अनेक सुअवसर प्राप्त कराने में सहयोग करेगा। इस में उस दिशा से सूर्य की रोशनी की पूर्ण व्यवस्था भी होनी चाहिये क्योंकि सूर्य की किरणें व्यक्ति में नवीन ऊर्जा का संचार करती हैं।1

3. अध्ययन कक्ष में माँ सरस्वती का चित्र अवश्य लगायें और यदि सम्भव हो तो अवश्य ही 'ऊँ सरस्वत्यै नमः' इस मंत्र का जाप श्रद्धा के अनुसार करें, क्योंकि हमारे वेद पुराणों में वर्णित मंत्र का श्लोक का उच्चारण वातावरण में एक अलौकिक प्रभाव छोड़ते हैं। विद्या अध्ययन के आशा के अनुरुप सफलता प्राप्त करने के लिये विद्यादायिनी मंत्र जाप माँ सरस्वती से आर्शीवाद प्राप्त करने का एक शक्तिशाली माध्यम है।

4. अध्ययन कक्ष की दीवारों पर महापुरुष व सफल व्यक्तियों के चित्त या प्राकृतिक दृश्य की चित्त लगा सकते हैं। मेज पर रखा हुआ सुन्दर गुलदस्ता वातावरण को शांत व सुखद बनाता है। मेज के सामने अथवा पास में दर्पण भी ना रखें, ना ही मेज बीम के नीचे रखनी चाहिये।

5. विद्याअध्ययन कक्ष में समय–समय पर देखभाल भी आवश्यक ळै, किताबों व अन्य वस्तुओं को व्यवस्थित कर उन्हें बुक शेल्फ में इस प्रकार लगायें कि उन्हें सरलता से प्राप्त किया जा सकें। कागज के टुकड़े, टूटे हुये बेकार पेन, पेन्सिल आदि रखने के लिये डस्टबिन भी रखना चाहिये।

6. अध्ययन कक्ष का रंग हल्का गुलाबी, हरा, नीला रखना चाहिये जो बच्चे विद्या अध्ययन करते समय शीघ्र सोने लगते हैं अथवा आलस और थकान से ग्रस्त हो जाते हैं विशेषरुप से ऐसे बच्चों के कक्ष में हल्के रंग के पर्दो का प्रयोग करें क्योंकि हरा रंग विद्या और लेखन का कारक बुध ग्रह का प्रतीक माना जाता हैं इस प्रकार का वास्तु सहयोग बच्चों की स्मरण शक्ति में वृद्धि करेगा और अपेक्षा से अधिक शुभ परिणाम बच्चों की विद्या प्राप्ति में प्राप्त होगें।

7. मंदबुद्धि बच्चों के अध्ययन कक्ष में पढ़ने की मेज पर ऐजुकेशन टावर अथवा पिरामिड रखना चाहिये क्योंकि पिरामिड के कोने शन्ति, बुद्विमत्ता व एकाग्रता की प्राप्ति कराते हैं इसकी विशेष आकृति उपयोगी ऊर्जा का प्रसार करती है जिससे बच्चों का मन इधर–उधर ना भटक कर विद्या अध्ययन करने में लगा रहता है।

8. विद्या अध्ययन कक्ष में बच्चे यदि कंम्यूटर का प्रयोग करते हैं तो कंप्यूटर आग्नेय कोण से दक्षिण व पश्चिम दिशा में रखा सकते हैं। ईशान कोण में कंप्यूटर नहीं रखना चाहिये। यदि अध्ययन कक्ष बड़ा हो तो लाइब्रेरी भी दक्षिण पश्चिम दिशा में बना सकते हैं। अध्ययन कक्ष में अनावश्यक वस्तुओं को नही रखना चाहिये।

9. छः मुखी रुद्राक्ष भगवान षडानन अर्थात भगवान कार्तिकेय का स्वरुप माना जाता है इस रुद्राक्ष को बच्चों को पहनाने से स्मरण शक्ति जाग्रत होती है, आत्मशक्ति के साथ–साथ ज्ञानशक्ति का दाता यह रुद्राक्ष बच्चों की विद्या प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होता है।

वास्तु अनुसार बने कक्ष में किया गया विद्या अध्ययन बच्चों में एकाग्रता तो लाता ही है साथ ही उन्हें अपने सफल लक्ष्य की ओर भी अग्रसर करता है जो बच्चे दिन–रात लगातार पढ़ाई करते हैं, कठोर परिश्रम करते हैं उन्हें कठिन से कठिन विषय सरलता से याद होंगे, उनकी स्मरण शक्ति में वृद्धि होगी और विद्या में सफलता प्राप्त कर अपने जीवन में सुखी और उन्नति के शिखर पर विराजमान होंगे, अतः न केवल परीक्षा के समय में वास्तुशास्त्र के नियमों का सहयोग ले अपितु जब भी आप विद्या अध्ययन करें वास्तु नियमों का सहयोग लेकर अपने भविष्य को उज्जवल बनायें।

परीक्षा में सफलता की गांरटी केवल उपरोक्त उपाय ही नहीं हो सकते। उपरोक्त उपाय को करने के साथ–साथ उचित परिश्रम व लगन की भी आवश्यकता है, अतः यदि सभी विद्यार्थी पूर्ण मनोयोग एवं उचित परिश्रम से उपरोक्त वास्तु उपायों को अपनाकर परीक्षा की तैयारी में जुट जायेगे तो सफलता उनके कदम चूमेगी।

❋ ❋ ❋

रुद्राक्ष एक-काम अनेक

डॉ. श्रीमती रेखा जैन "आस्था"
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तुशास्त्राचार्य
फोन नं. 0562 3250546

पौराणिक साहित्य में प्रलय से सम्बन्धित एक गाथा के अनुसार भगवान शंकर ने तीसरे नेत्र को खोलकर संसार को भस्म कर दिया था भगवान शंकर के इस तीसरे नेत्र को बन्द करने की प्रक्रिया में जो ज्योति कण विखरे वे स्वतः पुण्य से आलोकित थे। जो ब्रह्माण्ड रश्मियों से संघात पाकर रुद्राक्ष में बदल गये।

एक अन्य पौराणिक गाथा के आधार पर भुसुण्ड नामक एक ऋषि ने कालाग्निरुद्र से पूछा कि रुद्राक्ष की उत्त्पत्ति किस प्रकार हुई तथा उसके धारण करने से क्या फल मिलता है। इसे आप लोक हित के लिए कृपा करके कहिये। कालाग्निरुद्र ने भगवान से कहा कि त्रिपुरासुर नाम दैत्य का नाश करने के लिये मैने नेत्रों को बन्द कर लिया था। उस समय मेरी आँखों से जल के बिन्दूओं पृथ्वी पर गिरे और रुद्राक्ष में परिणित हो गये।

रुद्राक्ष धारण करने से भक्तों के पाप नष्ट होते है। जो मनुष्य रुद्राक्ष की माला से इष्टदेव का जप करता है। उसे अनन्त गुण पुण्य की प्राप्ति होती है। आंवले के फल के समान आकार वाला रुद्राक्ष उत्तम होता है।

बेर के सामान आकार वाला रुद्राक्ष मध्यम होता है। और चने के समान आकार वाला रुद्राक्ष निम्न होता है। इसके अतिरिक्त काली मिर्च के समान आकार वाले रुद्राक्ष को राजमणि कहते है। इसमें सबसे श्रेष्ठ रुद्राक्ष विभूति तथा भस्म जैसे ज्योतिर्मय रंग का होता है। यह कलियुग में सुलभ नहीं है। इसके विषय में रुद्राक्ष जावालोपनिषद में स्पर्श मात्र से दो हजार गायों के दान की महिमा प्राप्त होना बताया गया है।

सामान्यतः– चौदह प्रकार के रुद्राक्ष आज भी पाये जाते है। जो चौदह विद्याओं के अशावतार के रुप में प्रसिद्ध है।

एक मुखी रुद्राक्ष – यह रुद्राक्ष ब्रह्म नाम से पहचाना जाता है। यह साक्षात शिव के रुप में जाना जाता है। जहाँ यह रहता है। वहाँ लक्ष्मी स्थिर रहती है। यह पाप नाशक, ज्ञान में वृद्धि करने वाला, सर्वसिद्धि दाता माना जाता है। इसको धारण करने वाला व्यक्ति दैवीय शक्तियों का कृपा पात्र होता है।

द्विमुखी रुद्राक्ष – अर्द्धनारीश्वर भगवान की प्रसन्नता के लिए धारण किये जाने वाला यह हर गौरी रुद्राक्ष पति–पत्नी के पारस्परिक प्रेम एवं गृहस्थाश्रम की सुख शान्ति के लिए पहना जाता है। इससे अनेक प्रकार के रोग दूर होते हैं। यह वशीकरण के प्रभाव से युक्त, भूत–बाधा नाशक मिर्गी, मूर्छानाशक, कल्याणकारी, गर्भरक्षक एवं सुख–सौभाग्य वर्धक माना जाता है।

तीन मुखी रुद्राक्ष – त्रिदेव नाम से सम्बोधित इस दिव्य रुद्राक्ष को तीनों गुण पर वशीकरण द्वारा सृष्टि विज्ञान हेतु धारण किया जाता है। यह साक्षात अग्नि स्वरुप है इसके धारण करने से श्री तेज, आत्मबल की वृद्धि होती है यह विद्या दाता ही इसे कार्य सिद्धि, विद्या प्राप्ति, भौतिक जीवन के अनुकूल साधनों की उपलब्धि के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।

चार मुखी रुद्राक्ष – इसे ब्रह्म का स्वरुप माना गया है। इसकी पूजा, स्पर्श धारण करना सभी कुछ कल्याणकारी है। इसके धारण करने से धारक को आर्थिक लाभ मिलता हैं तथा सदबुद्धि प्राप्त होती है। यह अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों का दावा है। यह रुद्राक्ष बुद्धि, सुख एवं ऐश्वर्य का प्रदाता होने के कारण ही सामान्यतः सृजन शीलता, कविता, सन्तानोत्पत्ति आदि के लिए धारण किया जाता है। इसे प्रजापति नाम से भी अमिहित करते है।

पंचमुखी रुद्राक्ष– रुद्रकालाग्नि नाम का यह रुद्राक्ष पंच तत्व पर नियंत्रण हेतु धारण किया जाता है। उपनिषद के अनुसार इसे धारण करने से नरहत्या आदि से मुक्ति प्राप्त होती है। यह साक्षात व रुद्ररुप ही यह सभी कामनाओं का दाता, मोक्षदायी, सर्ववाहारी है। इसकी 108 मनको की माला धारण करने का विशेष महत्व है। इसे धारण करने से समस्त मनोंकामनाए पूर्ण होती है। इसके प्रभाव से दरिद्रता दूर हो जाती है। समृद्धि मिलती है। निरोग जीवन का सुख प्राप्त होता है।

छः मुखी रुद्राक्ष – इसे धारण करने से पापों का नाश होता है। उसके ज्ञान का प्रसार होता है। इसे विद्यानु रागी छात्र एवं अध्येताओं को अवश्य धारण करना चाहिए। कार्तिकेय नाम यह महत्वपूर्ण रुद्राक्ष राजनैतिक पदवृद्धि राज्य सत्ता प्राप्ति एवं अपने विरोधियों पर सार्वभौम विषय प्राप्त करने की कामना से उपयोगी होता है। यह दायी भुजा में धारण किया जाता है। यह ब्रह्महत्या जैसे पाप का निवारक है।

सात मुखी रुद्राक्ष – यह सप्तऋषि स्वरुप है। यह गले में व दायी भुजा में धारण किया जाता है। इसके धारण करने से दरिद्र भी धनी हो जाता है। सप्तषां नाम से सम्बोधित यह सुन्दर रुद्राक्ष सब विद्याओं का ज्ञान एवं अटूट लक्ष्मी का व्यक्तित्व प्रदान करता है। यह सप्तमाला देवी का स्वरुप है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह स्वासों प्राणों का संगठक है। इसको धारण करने वाला सदाचारी महाज्ञानी और पवित्र हो जाता है। यह परम सिद्धि सांसारिक वैभव का दाता माना जाता है। साधना करने वाले साधकों अवश्य धारण करना चाहिए।

आठ मुखी रुद्राक्ष– यह भैरव का स्वरुप हैं समस्त पापों का नाशक दीर्घायु प्रदाता तथा शिवलोक का मार्ग निर्देशक हैं यह अष्ट

शेष पेज 20 **पर**.....

लाल किताब से जानिये साल 2011 का हाल

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता
मो. 9319221203

मेष– 12वें घर में बैठा गुरु आपको विदेश से शुभ समाचार मिलने के संकेत दे रहा हैं। गुरु आपके नौवें घर का स्वामी यात्राओं और भाग्य का परिचायक है। इसका 12वें घर में दूरस्थ स्थानों से जुड़े कामों में अच्छा भाग्य होना सुनिश्चित करती है। यह समय पुराने संबंधों को फिर तरोताजा करने और कुछ नये संबंध बनाने का हैं। छठे स्थान में शनि के होने से आपका रफ्तार भले ही धीमी हो जाये, लेकिन अब यह रुकेगी नहीं। अपनी तरक्की के मार्ग में आने वाली कुछ रुकावटों को दूर कर आप ये उपाय कर सकते है।

ज्योतिषीय सलाह – थोड़ी–सी हल्दी को गीला कर अपने मस्तक पर प्रतिदिन तिलक लगायें। चमड़े के जूते/सैंडल और लोहे का सामान दान करें। लाल रंग का रूमाल सदैव अपने पास रखें।

वृषभ– आप अपने बर्ताव के चलते अपनी लोकप्रियता और रिश्तों पर उल्टा असर डाल सकते हैं। हालाँकि जून 2011 के बाद सुधार होने की उम्मीद हैं। विद्यार्थियों को अपनी पढ़ाई की ओर अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है। आर्थिक पक्ष में नीले रंग से परहेज करें और शेयर बाजार में पैसा लगाने से बचें। फायदा और रोमांच पहुँचाने वाली लम्बी यात्राएँ जुलाई में होने का योग हैं।

ज्योतिषीय सलाह – विद्यार्थियों को काले रंग से परहेज करना चाहिये। गाय को हरी घास खिलायें। किसी भी रुप में मदिरा/एल्कोहल का सेवन न करें।

मिथुन– साल 2011 में प्रवेश करते समय गुरु आपके लग्न से 10वें घर में स्थित होगा। इसका अर्थ यह है कि तरक्की के लिये आपको अपनी दुनियादारी की सूझबूझ को बढ़ाने की जरुरत हैं। व्यक्तित्व विकास और सेल्समैनशिप से जुड़े कम अवधि के मद्दगार साबित होगें। शनि आपकी मानसिक शांति को भंग कर सकता है। इस साल आपकी माता का स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है।

ज्योतिषीय सलाह – प्रतिदिन कौवे को आहार दें। अपनी नाक को साफ और सूखा रखें। भगवान की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करें।

कर्क– विदेश यात्रा के लिए यह उपयुक्त समय है! इस दौरान आप निश्चित तौर पर व्यापार के साथ–साथ आमोद–प्रमोद कर पाएंगे। अपने खर्चे पर ध्यान रखें। प्रयास करें कि आपकी यात्रा प्रायोजित हो सके। गर्भवती महिलाओं को किसी भी तरह बचने के लिए स्वयं का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।

ज्योतिषीय सलाह – प्रतिदिन कुत्तों को भोजन करायें। शुद्ध शाकाहारी बनें और मांसाहार को पूर्णतः छोड़ दें। अपने बेटे और भतीजों से अच्छे रिश्ते बनाये रखें।

सिंह– इस साल बेवजह की आलोचना और पीठ पीछे बुराई सहने के लिये तैयार रहें। आपको धोखा दे सकता है, इसलिये आंखें बंद कर विश्वास न करें। आय के नये स्त्रोतों की तलाश करे और केवल उसी में संतुष्ट न हों जो आपको मिल रहा हैं। परिवार के साथ अच्छे रिश्ते रखें, इससे आपको सकारात्मक परिणाम मिलेंगे।

ज्योतिषीय सलाह– हर गुरुवार पीपल के पेड़ की जड़ों में पानी दें। ध्यान रखें कि बिजली के सभी उपकरण सही प्रकार से कार्य कर रहे हों। प्रतिदिन मंदिर अथवा किसी धार्मिक स्थल पर अवश्य जायें।

कन्या– इस साल आपको कानूनी पचड़े परेशान कर सकते हैं। जरुरी नहीं कि ये बड़े मामले हों, बल्कि ये ट्रैफिक पुलिस को चालान टैक्स संबंधी मामलों में हो वाली दिक्कत जैसे छोटे मसले भी हो सकते हैं। किसी का सलाहाकार बनना आपको आर्थिक नुकसान पँहुचायेगा ही, साथ ही आपकी छवि को भी नुकसान पहुँच सकता है। मांस और मदिरा का सेवन व समस्याओं में इजाफा ही होगा। भगवान शिव की उपासना आपको कई समस्याओं से बचा सकती है।

ज्योतिषीय सलाह– कपड़ों को दान या तोहफे में न दें। बंदरों को खिलायें। काले कपड़े न पहनें।

तुला – आपकी कुंडली में राहु की स्थिति आपको साहस और विश्वास देगी। इस साल स्वयं को अयोग्य न समझें। लम्बी यात्राऐं होंगी। आप अपने सपनों और इच्छाओं को पूरा करने में कामयाब

शेष पेज 22 **पर**.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 250/– **वास्तु परामर्श शुल्क रु.** 500/– **(मकान का नक्सा आवश्यक)**

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के भारतीय स्टेट बैंक खाते में 10039621088, आगरा शाखा में जमा

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा
फोन : 0562–2856666, 2525262, 9719005262
ई मेल : maheshparasar@anushthan.in

मास्टर बेडरूम

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) 326023
मो. नं. 09413103883, 09024390067
e-mail: vastushastri08@yahoo.com

शयन मनुष्य की एक अतिआवश्यक क्रिया हैं । शयन मनुष्य को सुकुन एवं ताजगी प्रदान करता हैं यदि मनुष्य ठीक प्रकार से नहीं सो पाता तो उसे अनेक प्रकार के रोग घेर लेते हैं और वह कार्य करने में अपनी पुरी क्षमता का उपयोग नहीं कर पाता हैं । गृहस्वामी का शयनकक्ष दक्षिण–पश्चिम कोण में अथवा पश्चिम दिशा में होना चाहिए। घर के प्रधान सदस्य या प्रधानकर्ता के सोने के कमरे को मास्टर बेडरूम कहते हैं। इसका आकार, साज–सज्जा, स्थान कहाँ और कैसा हो –

1. भवन के साउथ वेस्ट के कमरों को मास्टर बेडरूम कहते हैं। घर का प्रधानकर्ता टॉप फ्लोर के साउथ वेस्ट में रहे गें । मास्टर बेडरूम का आकार आयताकार होना चाहिए। अटैच बाथरूम कमरे के नार्थ वेस्ट में होना चाहिए।

2. बैडरूम दो दिशाओं में खुला होना चाहिए , मुख्य द्वार नार्थ ईस्ट में होना चाहिए। रूम के साउथ वेस्ट के कोने में कोई विन्डो नहीं होनी चाहिए। मास्टर बैडरूम के साउथ–वेस्ट में लॉकर/तिजोरी होनी चाहिए। तिजोरी लकड़ी के पाये पर होनी चाहिये। तिजोरी का मुँह पूर्व या उत्तर में होना चाहिए।

3. बैड साउथ साइड की वाल पर लगा होना चाहिये। बैड का ज्यादा हिस्सा साउथ वेस्ट की तरफ होना चाहिये। सोते समय सिर साउथ में व पैर नार्थ में होने चाहिए। बैडरूम की सींलिंग में अगर कोई बीम आ रहा हो तो पी ओ पी के माध्यम से एक समान सीलिंग बना लेनी चाहिये जो देखने में आँखों को सुन्दर लगे।

4. मास्टर बैडरूम को पूरा फर्नीचर से नहीं भर देना चाहिये। बहुत ही हल्का फर्नीचर जो कम स्थान घेरे , ज्यादा खाली रहे ऐसा बनाना चाहिए। फर्नीचर में गोलाई का आकार काम में नहीं लेना चाहिए। अगर सुन्दरता के लिए काम में ले तो उसका उपयोग कम से कम करें। बैड के सामने ड्रेसिंग टेबल व टी.वी. नहीं होनी चाहिए। ड्रेसिंग टेबल रहने से रूम में कोई तीसरे आदमी की उपस्थिति का आभास होता हैं। ऊर्जा का ह्रास व नींद में विघ्न आता हैं। अगर लगाना पड़े तो मोटे कार्टून से बन्द करके रखें।

5. ऑफिस का बेग व फाईलें शयन कक्ष में न रखें। रूम का वातावरण ऑफिस की तरह तनावपूर्ण हो जाता हैं। निद्रा में विघ्न पैदा करता हैं। रूम में किसी भी देवी–देवता , भगवान का चित्र न लगायें। पलंग के सामने अपने संयुक्त परिवार का चित्र लगा सकते हैं। पलंग का गद्दा सिंगल लगायें।

6. शयन कक्ष में कभी झाड़ू नहीं रखनी चाहिए । शयन कक्ष में तेल का कनस्तर, ईमामदस्ता, अंगीठी आदि नहीं रखने चाहिए

शेष पेज 22 **पर**.....

होली "बुराई पर भलाई की जीत"

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
फोन. 9412257617,
0562-2571618

होली हास–परिहास एवं हुड़दंग का त्यौंहार है। इस त्यौंहार का संबंध भक्त प्रहलाद से जुड़ा हुआ है। दैत्यों के राजा हिरण्यकश्यप ने अपने विष्णु भक्त पुत्र प्रहलाद को मारने के अनेक उपाय किए लेकिन फिर भी असफल रहा तो उसने भक्त प्रहलाद को अपनी बहन होलिका को सौंप दिया। होलिका को यह वरदान मिला हुआ था कि अग्नि उसे जला न सकेगी होलिका प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर अग्नि के बीच जा बैंठी। देव योग से होलिका जल कर भस्म हो गयी एवं प्रहलाद जीवित बच गया। तभी से होली जलाने की परंपरा चल पड़ी क्योंकि इसमें होलिका के रुप में बुराइयों को खत्म करने का महत्व छिपा हुआ है।

इस त्यौंहार के बारें में यह भी कहा जाता है कि एक बार भगवान शिव तपस्या करने में इतने खो गए कि ब्रह्मांड को ही भूल गए। जिसके परिणाम स्वरुप संसारचक्र की प्रक्रिया को ही खतरा पैदा हो गया तब उनका ध्यान भंग करने के लिए देवतओं ने कामदेव और उनकी पत्नि रति को भेजा। वे शिव जी के सामने ही रति क्रीड़ा में संलग्न होकर कामवाण छोड़ने लगे। ऐसा करने से जैसे ही भगवान शिव का ध्यान भंग हुआ तो उनकी क्रोधा अग्नि भड़क उठी। जिसके परिणाम स्वरुप उनका तीसरा नेत्र खुल गया उससे निकली ज्वाला में कामदेव भस्म हो गये। अपने पति की मृत्यु से दुखी होकर रति बिलाप करने लगी क्रोध के शांत होने पर भगवान शिव ने रति को कामदेव से प्राणमिलन का वरदान दिया। जिसमें सृष्टि के विकास में उत्पन्न बाधा दूर हो गई। इसमें होलिका का वातावरण निर्मित हो गया। तभी से प्रतीक के रुप में हर वर्ष लकड़ियां जलाकर होली का त्यौंहार मनाया जाता है। दक्षिण भारत में आज भी होली का उत्सव मदन–महोत्सव के नाम से विख्यात है।

भगवान श्री कृष्ण ने इसी दिन पूतना नामक राक्षसी का बध किया था। इसी खुशी में होली का त्यौंहार वृंदावन में मनाया जाता है। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन जो मनुष्य चित्त एकाग्र करके हिंडोलें में झूलते हुए श्री गोविन्द पुरुषोत्तम के दर्शन करते हैं वे निश्चय ही बैंकुण्ठ लोक को जाते हैं। इसी दिन मनु का जन्म भी हुआ था।

होली रंगों का एक सामाजिक त्यौंहार है, आनंदों का, लाभ का पर्व है। इसके समान आनंद और प्रसन्नता देने वाला दूसरा कोई त्यौहार नहीं है। होलिका दहन से सारे अन्तर दूर हो जाते हैं इसकी अग्नि से रोगों के कीटाणुओं का नाश होता है और अग्नि की परिक्रमा करने से उच्चताप के प्रभाव वश शरीर से चिपके जीवाणुओं को नष्ट करने में सहायता मिलती है।

पूजनविधि–विधान– यह त्यौहार फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष

शेष पेज 22 **पर**.....

बुजुर्गो की अध्यात्म सेवा

परमेश्वर दत्त मिश्रा
ज्योतिष ज्ञानाचार्य
फोन. 9720386116

भारतीय समाज में बुजुर्गो को सम्मान्यनीय व पूज्यनीय माना गया वर्तमान युग में विज्ञान व आर्थिक उन्नति अवश्य ही हुई है, लेकिन लोगों का स्वाभाव भी परिवर्तन हुआ है। आधुनिक लोग अर्थ लोलुपता, प्रतिस्पर्धा की भाग दौड की व्यस्थता से तनाव ग्रस्त दिखाई पडते है। जिसका प्रभाव परिवारिक जीवन पर पड रहा है। बुजुर्गो का पालन पोषण व स्वास्थ्य सम्बन्धी दिक्कतो को देखते हुए, उनकी उचित व्यवस्था की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति में वैदिक काल में मनुष्य के जीवन को प्रायः चार भागों में विभक्त किया गया था, जिसे आश्रम के नामों से जाना जाता है। जन्म से 25 वर्ष की आयु तक ब्रम्हाचर्य आश्रम का पालन करके लोग शिक्षा अध्यात्म ज्ञान, योग आदि जीवन के निर्वाह हेतु कार्यो की शिक्षा ग्रहण करते थे। जिससे मनुष्य निरोगी होकर स्वास्थय जीवन जीता था लेकिन आधुनिक में इसके विपरीत ही होता है। लोग विवाह 25 वर्ष के पश्चात करते है। लेकिन ब्रह्मचर्य का पालन इस अवस्था तक कितने लोग करते है, जिससे विधार्थीयों में अनेकों प्रकार की दुर्घटना व तनाव का कारण वनती है। भागे रोग भयम् भोग से व्याधि उत्पन्न होती हैं तथा शरीर का तेज नष्ट हो जाता है। जब लोग स्वंय सक्षम हो जाते थे, तो वे गृहस्थ में विवाह आदि के पश्चात् ऐश्वर्यमय जीवन निर्वाह के साथ स्वस्थ मन से कर्तव्य पालन करते थे। 50 वर्ष के पश्चात् जंगल या पर्वत श्रृखलाओं में जाकर ज्ञान विज्ञान व अध्यात्म की खोज करते थे, मनुष्य के जीवन के समस्त पहलुओं पर आत्म मंथन करके निर्णय ढूढते थे, उसके कुछ समय के पश्चात मोह माया त्याग करके ईश्वर अराधना में लीन होकर परम तत्व प्राप्त करते थे।

आधुनिक युग में आश्रम व्यवस्था प्रायः लुप्त सी हो गयी है, लोग घर में रहकर परिवार के साथ रहकर ज्ञान विज्ञान की खोज व लोगों के कल्याणर्थ कार्य करते है।

कुछ विद्वान धर्मगुरुओं की देन है "खाओ पियो मौज करो" ईश्वर अराधना करो, नये ज्ञान विज्ञान की खोज करों। कुछ विद्वान धर्मगुरु सात्तविक विचार धारा के लोग ज्ञानविज्ञान, अध्यात्म, योग तपस्या ईश्वर की अराधना व स्वयं के त्याग द्वारा लोगों का कल्याण करते हैं। और वैदिक नियमों के पालन करके आज भी हमारे आदर्श के रुप में कार्य कर रहे हैं।

आज हमें अध्यात्म के बारे हम सबको जागरुक होने की आवश्यकता है, अध्यात्म के बारे में कठोपनिषद में कहा गया है, शरीर एक रथ है, इन्द्रियां घोड़े है, मन गुलाम है, बुद्धि सारथी है, और यात्रा करने वाली हमारी आत्मा है। और आत्मा ईश्वर का अंश है। गोस्वामी तुलसी जी राज चरित्रमानस् कहते है,

''ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुख रासी''

प्रत्येक जीव धारी में ईश्वर का अंश बताया गया है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को अच्छे व ईश्वर के बताए कार्यो को करने से हमें प्रसन्नता व सुख प्राप्त होता है। हमें दुःख क्यों होता है। जब हमारे द्वारा किसी भी व्यक्ति या प्राणी को मन, वाणी, कर्मो के द्वारा कष्ट पहुचाँया गया हो तो हमें दुख प्राप्त होता है। मनुष्य तो शारीरिक सुखों की प्राप्ति हेतु समस्त ऐश्वर्य वस्तुओं का संग्रह करता है। फिर भी उसे प्रसन्नता नही मिलती, जिसका कारण कि हम ईश्वर के बताए हुए कर्मो को नही करते, इसलिए आवश्यक है कि हम जरुरत मन्द असहाय बिमार, वृद्धों, गरीबो की सेवा करें और उनके कल्याणार्थ उचित व्यवस्था करने की आवश्यकता है। इसलिए हमें समाज को जागरुक व सुधारने की आवश्यकता है। इस कार्य को करने के लिए स्वयं आगे आने की जरुरत है। जब हम स्वयं सुधरेगें तभी यह कार्य सम्भव हैं अपने से बड़ों के सम्मान के साथ अभिवादन की आवश्यकता है।

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोऽपि सेविनः
तस्य चत्वारि वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशोवलम्। मनु स्मृति

वृद्धो की सेवा व उनका अभिवादन करके हम प्रायः चार वस्तुओं की प्राप्ति कर सकते है जिसकी तलाश प्रत्येक मनुष्य को होती है। अधिक आयु, विद्या, यश और बल वृद्धो की सेवा व अभिवादन से मिलता है। वृद्धों के अनुभवो को प्राप्त करने के लिए उनके समीप जाने की आवश्यकता है।

''सेवा धर्म परम गहनो, योगिना मत्य गान्य'' मानव मात्र की सेवा करने के लिए योगियो ने परम कर्त्तव्य बताया है।

''सन्निकर्षाश्चि सौहार्द जायते'' जब व्यक्ति समीप जाते है तो प्रेम बढ़ता है।

मनुष्य की जवानी अगर वसन्त ऋतु है, वसन्त में फूलो पर भँवरे मंडराते है। इस अवस्था में मनुष्य अपने सामर्थ्य अनुसार अनेक कार्य करता है, अगर इसमें युवाओं का जोश और बुजुर्गो के होश का तालमेल हो जाये तो, समाज और देश का भविष्य चमक जायेगा। मनुष्य की वाल्यावस्था प्रातः काल तो युवावस्था श्रेष्ठ कर्मो को करने की वृद्वावस्था जीवन की सायं काल है। अगर सुबह की सौहार्द मध्यान्हकी उमंग और सायं काल की खूबसूरती तीनो को एकत्रित कर दिया जाय तो उसका परिणाम सुखद होगा। वृद्व का मतलब थका हुआ नहीं या डरा हुआ नही। वृद्व का अर्थ होता है बढ़ा हुआ, विकसित या परिपक्व, अगर इनको हम एकात्मक तरीके से देखेगें तो वरदान साबित होगा। अस्वस्थता, निराशा, दुर्बलता ये सब मिलकर वृद्धवस्था को बोझ बना दिया है। आज बुजुर्गो की सामूहिक समस्या, सक्रामक रोग, हड्डियों का शक्त होना, इन्द्रियों की शिथिलता आदि शारीरिक मानसिक बिमारी परेशान करती है। अगर पारिवारिक स्थिति ठीक न होतो इस अवस्था में बहुत दिक्कतें उत्तन्न होती है। अगर युवा व बुजुर्ग दोनों सक्रिय हो तो इस अवस्था को सुखमय बना सकते है। अगर युवाओं से साहस तो वृद्धो से अनुभव के खजाने की प्राप्ति कर ली जाय तो जीवन में आनन्द की अनुभूति होगी। बुजुर्गो के मौत का प्रतीक्षालय के बजाय जीवन का अनूठा

शेष पेज 22 **पर**.....

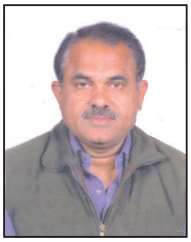

गोबर से रोग निवारण

डॉ. सतीश शर्मा
पशुधन प्रसार अधिकारी
पशुपालन विभाग उ. प्र.
मो. 9412254180

भारतीय संस्कृति में पवित्रीकरण–हेतु विभिन्न अवसरों पर गोबर की उपयोगिता प्रतिपादित की गयी है। सिर से पाँव तक गोबर लगाकर स्नान करते समय इस मन्त्र के बोलने का विधान है–

अग्रमग्रं चरत्नीनामोषधीनां बने बने।
तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।।
तन्म रोगांश्च शोकांश्च नुद गोमय सर्वदा।

गोबर पोषक, शोधक, दुर्गन्धनाशक, सारक, शोषक, बलवर्धक तथा कान्तिदायक है। अमरीकी डॉ. मैकफर्सन के अनुसार गोबर के समान सुलभ कीटाणुनाशक द्रव्य दूसरा नहीं है। रुसी वैज्ञानिकों के अनुसार आणविक विकिरण का प्रतिकार करने में गोबरसे पुती दीवारें पूर्ण सक्षम हैं। भोजन का आवश्यक तत्व विटामिन बी–12 शाकाहारी भोजन में नहीं के बराबर होता है। गाय की बड़ी आँत में इसकी उत्पत्ति प्रचुर मात्रा में होती है पर वहाँ इसका आचूषण नहीं हो पाता, अतः यह विटामिन गोबर के साथ बाहर निकल जाता है। प्राचीन ऋषि–मुनि गोबर के सेवन से पर्याप्त विटामिन बी12 प्राप्त कर स्वास्थ्य तथा दीर्घायु प्राप्त करते थे।

गोबर के मुखद्वारा सेवन तथा लेपन से निम्न व्याधियाँ नष्ट होती हैं–

(1) **हैजा–** कीटाणु–विशेष के द्वारा यह रोग जनपदोद्ध्वंस के रुप में फैलता है। शुद्ध पानी में गोबर घोलकर पीने से इस रोग से बचाव होत है। मद्रास के डॉ. किंगने गोबर की, हैजे के कीटाणुओं को मारने की शक्ति देखकर दूषित जल को गोबर मिलाकर शुद्ध करने की सलाह दी है।

(2) **मलेरिया–** गोबर का सेवन करने से शरीर में प्रविष्ट हुए मलेरिया के कीटाणुओं का नाश हो जाता है। इटली के वैज्ञानिक जी. ई. विर्गेडने सिद्ध किया है कि गोबर से मलेरिया के कीटाुण मरते हैं।

(3) **खुजली–** खाज, खुजली तथा दादका निवारण करने–हेतु गोबर का प्रयोग भारत में आदिकाल से किया जा रहा है। जल में घोलकर गोबर पीने तथा गोबर को प्रभावित भागपर मर्द कर गर्म पानी से स्नान करने से बहुत से चर्म रोग नष्ट हो जाते है।

(4) **अग्निदग्ध–** आग से जल जाने पर गोबर का लेपन रामबाण औषध है। ताजा गोबर का बार–बार लेप करते हुए उसे ठंठे पानी से धोते रहना चाहिये। यह व्रणरोपण तथा कीटाणुनाशक है।

(5) **सर्पदंश–** विषधर साँप, बिच्छू या अन्य जीव के काटने पर रोगी को गोबर पिलाने तथा शरीर पर गोबर का लेप करने से विष नष्ट हो जाता है। अति विषाक्तताकी अवस्था में गोबर का सेवन मस्तिष्क तथा हृदय को सुरक्षित रखता है।

(6) **दन्तरोग–** गोबर के उपले को जलाकर पानी डालकर ठंडा करें। तदनन्तर उसे सुखाकर बारीक पीसकर शीशी में रखें। इस गोबर की राख का मंजन करने पर पायारिया, मसूड़ों से खून, गिरना, दन्तकृमि तथा दाँतों के अन्य रोगों का भी क्षय होता है।

आयुर्वेदीय ग्रन्थों मे वर्णित पंचागव्य–घृत का चिकित्सा की दृष्टि से बहुत महत्व है। इसके निर्माण में ताजा गोबर का रस तथा गायका ही मूत्र, दूध, दही, और घी प्रयुक्त होता है। पंचगव्य–घृत के सेवन से उन्माद, अपस्मार, शोथ, उदररोग, बवासीर, भगंदर, कामला, विषमज्वर तथा गुल्म का निवारण होता है। सर्पदंश के विष को नष्ट करने–हेतु यह उत्तम औषध है। चिन्ता, विषाद मनोविकारों को दूर कर पंचगव्यघृत स्त्रायुतन्त्र को परिपुष्ट बनाता हे।

मासका त्याग श्रेयस्कर है 'हमें उन वस्तुओं का अनुसरण करना चाहिये, जिनसे हमें शान्ति मिल सकती हो और जिनसे हम दूसरों की उन्नति कर सकते हों।' मांस के लिये ईश्वर की बनायी हुई सृष्टि का संहार नहीं करना चाहिये। मांस खाना, मदिरा पीना या अन्य मानवता की अवनति, अपमान और निर्बलता में सहायक चीजों को सर्वथा त्यागना ही श्रेयस्कर है। (रोमान्स 16। 19–21)

सूर्यनमस्कार ॐ प्रणामासन

योगाचार्य प्रभुदयाल गुप्ता
Ph: 0562-2410609, 9412724151

1. प्रथम स्थितिः ओउम् मित्राय नमः। सूर्य प्रणाम में शरीर बारह विभिन्न आसनों को पूर्ण करता है। प्रत्येक आसन के साथ एक मंत्रोच्चारण करते हैं तथा श्वास का क्रम भी अपनाते है, कहां श्वास लेना है कहां छोड़ना है। इसमें आसन, प्राणायाम, मन्त्रोच्चारण (आध्यातमक क्रिया) तीनों प्रक्रिया होती है। सूर्य नमस्कार क्रिया में आसन हमेशा पूर्व की ओर मुख करके किये जाते हैं।

पहले पाँच या तीन बार ऊँ मंत्र उच्चारण करें, गहरा श्वास लें और दोनों हाथ जोड़कर स्थिर खड़े हो जाये। दोनों ऐड़ियाँ–पंजे (अंगूठे) आपस में मिले रहें। आंखें बन्द करके मन को नासिका पर स्थिति करें। धीरे–धीरे श्वास को छोड़े। इस आसन में मांस पेशियाँ पुष्ट होती है; मन में आत्म विश्वास पैदा होता हैं। शरीर लम्बवत् होने से ग्रीवा और कमर सीधी होने से मेरुदन्ड सीधा और लचीला होता है। इसीलिये सूर्य प्रणाम करने वालों की वृद्धावस्था में भी कमर नहीं झुकती।

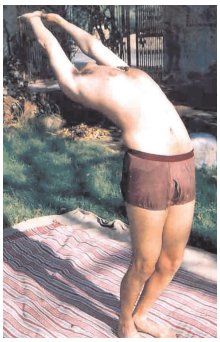

2. द्वितीय स्थिति : हस्त उत्तानासनः– ओउम् रबये नमः मन्त्र का उच्चारण करते हुये दोनों हाथों को नमस्कार की मुद्रा में श्वास भरकर अर्थात् पूरक करके दोनों हाथों को सिर की ओर लें जायें, दोनों हाथों की हथेली खुल जायेंगी और कमर भी पींछे की और झुकेगी, दोनों घुटने सीधे रहेंगे, दृष्टि भी ऊपर की ओर रहेगी। इस आसन में फेफड़े पुष्ट होते हैं, शरीर में रक्त का प्रवाह शुद्ध होता है, तथा मनोबल की बृद्धि होती है।

अलसी के गुण बेशुमार

श्रीमती पूनम अजय दत्त
मो. 9319221203

अलसी के बीज हल्की तैलीय गंधयुक्त होते हैं जिनमें मुख्य रुप से ग्लिसराड्ड्स व अनेक महत्वपूर्ण वसीय अम्ल जैसे लिनोलिक व लिनोलेनिक एसिड़, पामिटिक, स्टियरिक, ओलिक एसिड के अलावा आमेगा 3 फेटी एसिड जो हृदय को स्वस्थ रखते हैं आदि पाए जाते हैं। इसके अलावा अलसी में कुछ मात्रा में चीनी, प्रोटीन, कैल्शियम, पोटेशियम, लोहा, जिंक, फॉस्फोरस भी पाया जाता है। इसमें कोलेस्ट्रॉल व सोडियम की मात्रा अत्यंत कम तथा रेशे की मात्रा प्रचुर होती हैं

यूनाइटेड स्ट्रेट्रम के कृषि विशेषज्ञों के अनुसार अलसी के बीजों में 27 प्रकार के कैंसररोधी तत्व खोजे जा चुके हैं। अलसी में पाए जाने वाले ये तत्व कैंसररोधी हार्मोन्स को प्रभावी बनाते हैं, विशेषकर पुरुषों में प्रोस्टेट कैंसर व महिलाओं में स्तन कैंसर की रोकथाम में अलसी का सेवन कारगर हैं।

अलसी के सेवन से इतने लाभ प्राप्त होने के कारण ही इसे आजकल 'सुप–फूड' की श्रेणी में रखा जाने लगा है। शोध अध्ययन बताते हैं कि अन्य भोज्य पदार्थों की तुलना में अलसी के बीजों में प्लांट हार्मोन लिगनन्म की मात्रा 800 गुना अधिक होती हैं। जो कैंसर से बचाव व हृदय को स्वस्थ रखने में सहायक होते हैं।

अलसी के फायदे ही फायदे

ऊर्जा, स्फूर्ति व जीवटता प्रदान करता हैं। तनाव के क्षणों में शांत व स्थिर बनाए रखने में सहायक है। कैंसररोधी हार्मोन्स की सक्रियता बढ़ाता है। रक्त में शर्करा तथ कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करता हैं। जोड़ों का कड़ापन कम करता है। प्राकृतिक रेचक गुण होने से पेट साफ रखता है। हृदय संबंधी रोगों के खतरे को कम रकता है। उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करता है। त्वचा को स्वस्थ रखता है एवं सूखापन दूर कर एग्जिमा आदि से बचाता है। बालों व नाखून की वृद्धि कर उन्हें स्वस्थ व चमकदार बनाता है। इसका नियमित सेवन रजोनिवृत्ति संबंधी परेशानियों से राहत प्रदान करता है। मासिक धर्म के दौरान ऐंठन को कम कर गर्भशाय को स्वस्थ रखता है। अलसी का सेवन त्वचा पर बढ़ती उम्र के असर को कम रखता है। अलसी का सेवन भोजन के पहले या भोजन के साथ करने से पेट भरने का एहसास होकर भूख कम लगती है। इसके रेशे पाचन को सुगम बनाते हैं, इस कारण वजन नियंत्रण करने में अलसी सहायक हैं। चयापचय की दर को बढ़ाता है एवं यकृत को स्वस्थ रखता है। प्राकृतिक रेचक गुण होने से पेट साफ रख कब्ज से मुक्ति दिलाता है। ❋❋❋

माला के 108 मनकों का अर्थ

सुरेश अग्रवाल
मो. 9897137268

आध्यात्मिक दृष्टि से **108** अंक का बहुत महत्व है परन्तु इसका अर्थ भी जानना आवश्यक है। वर्णमाला का अध्ययन करें तो आरोह तथा अवरोह क्रम से इसमें **108** मन के आते हैं। अ वर्ग के **16**, क वर्ग से स वर्ग तक **25,** लकार।, य से ह तक **8** यानी **50** फिर अवरोह के **50** तथा **मूल ञ, कं, चं, टं, पं, तं, यं** और **शं** इस प्रकार सब मिलकर **108** हो जाते है।

कमल के पुष्प में **108** पंखुडियाँ होती है। हद्य से **108** नाड़ियों की उत्पत्ति होती है। शरीर के मर्मस्थल **108** होते है, जिन पर चोट लगने से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। भारतीय महर्षियों की अर्न्तदृष्टि के अनुसार, सूर्य का व्यास पृथ्वी से लगभग **108** गुणा बड़ा है। नवग्रह **12** राशियों में भ्रमण करते रहते है अतः इन का भ्रमण काल भी **108** माना गया है। सूर्य के **108** नाम है और देवीभागवत में **108** शक्ति पीठो का उल्लेख है।

दिन रात में **24** घण्टें होते हैं और मनुष्य इस अवधि में **21600** बार सासं लेता है यानी **12** घण्टे की जागृत अवस्था में **10800** बार। शत् एक के सूत्र को रखते हुए भारतीय मनीषियों ने माला जपने के लिए **108** मनकों की माला बनाई। **27** नक्षत्रों की गति भी **4–4** प्रहर के हिसाब से काल गणना **108** ऑकी गई है।

आयुर्वेद के अनुसार यह शरीर वात, पित और कफ इन तीन स्तम्भों पर खड़ा है। दोषों की गतियॉ **36** होती हैं। वात–पित–कफ जब इन दोषों की संगति करते हैं, तो कुल गतियॉ **108** हो जाती हैं। अब चूँकि मन इनका नियंत्रक है, अतः माला के 108 गुटकों को मनका कहा जाने लगा। **108** मनकों वाली माला से जाप करने से शारीरिक व मानसिक रोगों से मुक्ति मिलती है। सन्तों के नाम से पूर्व **108** की संख्या लगाई जाती हैं–पूर्णांक होने के कारण यह शक्ति और ज्योतिर्मय व्यक्तित्व का परिचायक है।

चाहे हम काल गणना को आधार मानें या वर्णमाला को मूल कारण समझें अथवा अन्य किसी भी दृष्टि से देखें **108** के अंक वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक प्रभाव के कारण चमत्कार के प्रतीक हैं।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपनाभवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

16 फरवरी - 15 मार्च

मेष (Aries)– चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– भाग्य एवं कर्म का शुभ फल प्राप्त होगा। व्यापार में वृद्धि एवं पद उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे उच्च पदाधिकारियों से मेलजोल बढ़ेगा। पिता एवं पत्नी का स्वास्थ्य बिगड़ने की सम्भावना है। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें।

वृष (Taures)– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– नवीन योजनाए क्रियान्वित होगी। व्यापार में वृद्धि व शुभकारी यात्राऐं होगी। धन का दुरुपयोग करने से बचें। विधार्थी वर्ग को आलस्य त्यागकर अपनी योजनाओं पर कार्य करना चाहिये। सरकारी कामकाज में सफलता मिलेगी। उतावलेपन मे कोई कार्य न करें वरना पछताना पड़ सकता है।

मिथुन (Gemini)– क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– महत्वपूर्ण कार्यो को न टालें। मनः स्थिति डाँवाडोल रहेगी। महिला वर्ग से सचेत रहें। वाद–विवाद व वाणी नियंत्रण रखे अन्यथा अपनी ही हानि होगी। खर्चे पर नियन्त्रण रखे कर्जा बढ़ता जाऐगा।

कर्क (Cancer)– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– आपसी सहमति से पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। संतान की तरफ से चिंताएं रहेगी। नौकरी में वेतन वृद्धि व प्रमोशन मिलने की सम्भावना है। नवीन योजनाओं में पूँजी निवेश करने से पहले सोच विचार लें। पिता व बुजुर्गो के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित रहेगें।

सिंह (Leo)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– साप्ताहिक कामों में फेर बदल होगा। आगुन्तकों से कष्ट मिलेगा। सहकर्मी आपके विरोधी बनेगें, आपके पाटनर से आपके सम्बन्ध खराब होगें। अनेक छोटी–मोटी घटनाएं आपको विचलित कर देगी। वाणी पर संयम रखें और समय को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न करें।

कन्या (Virgo)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– विधा–बुद्धि का लाभ मिलेगा। अनुसंधानात्मक कार्य सम्पन्न होगें। अत्यधिक खर्चे बढ़ने से आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी। सरकार व प्राइवेट नौकरी के लिये यदि आवेदन किया है तो शुभ समाचार प्राप्त होगा। बेकार की चिड़चिडाहट व क्रोध बने बनाये कामों में रुकावट पैदा करेगें।

तुला (Libra)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– मानसिक तनाव, अत्याधिक भाग दौड़, अनावश्यक खर्चो जैसी छोटी बड़ी बाते आपको परेशान करेगी। काफी परिश्रम के बाद कार्य सिद्धि होगी। वाहन चलाते समय सावधानी वरतें। सरकारी अड़चने दूर होगी। खेलकूद में रुचि बढ़ेगी। नयी योजनाएं लाभप्रद रहेगी।

वृश्चिक (Scorpio)– तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– साहस–पराक्रम में वृद्धि होगी। मकान का सुख प्राप्त होगा। धार्मिक आध्यात्मिक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। जीवन साथी के कार्यो से मन प्रसन्न होगा। गलत संगत से अपने को बचाऐं। आपके कैरियर को नई ऊँचाइया मिलेगी। आपके शत्रु आपके परिवार को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगें।

धनु (Sagittarius)– ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे– परिवारीजनों से वैर–विरोध बढ़ेगा। खान–पान पर नियन्त्रण रखें । कर्म क्षेत्र में प्रगति होगी। लाभ के नये अवसर प्राप्त होगें। पाटनर से अनबन रहेगी। धार्मिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी रहेगी। संतान से यथेष्ट सुख प्राप्त होगा।

मकर (Capricorn)– भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– स्वास्थ्य में शिथिलता रहेगी। बेकार के अन्धविश्वासों से दूर रहें। लेन–देन में देरी से मानसिक तनाव रहेगा। योजनाओं को कार्य रुप देने के लिये परिवार में भी सलाह लें। अनावश्यक खर्चे से बचें।

कुम्भ (Aquarius)– गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा– सुख सुविधाओं का लाभ–प्राप्त होगा। अनुसंधानात्मक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। भाग–दौड़ का यथेष्ट फल अवश्य प्राप्त होगा। साहस–पराक्रम की वृद्धि होगी। मनोरंजन–भ्रमण में खर्चे बढ़ेगें। बेकार के प्रलोभनों से बचें।

मीन (Pisces)– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची– व्यवसायिक या व्यक्तिगत यात्राएं होगी। रहस्यात्मक बातों से पर्दा उठेगा। किसी कार्य के पूर्ण होने की प्रसन्नता होगी। अनावश्यक खर्चे बढ़ेगें। कारोबार में नये समझोते करने पड़ेगे। लाभ के अवसर प्राप्त होगे। सकारात्मक दृष्टिकोण समस्याओं को कम करेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषशास्त्राचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

फरवरी	मार्च
16 प्रदोष व्रत,	**2** प्रदोष व्रत
18 पूर्णिमा स्नान समाप्त,	**3** महाशिव रात्रि व्रत
संत रविदास जयंती	**4** फाल्गुनि अमावस्या
21 श्री गणेश चतुर्थी व्रत	**6** फुलैरा दौज,
25 सीताष्टमी (जानकी जयंती)	श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती
27 स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती	**8** विश्व महिला दिवस,
28 विजया एकादशी व्रत,	श्री विनायक चतुर्थी व्रत
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य तिथि	**13** दुर्गाष्टमी, होलिकाष्टक प्रारम्भ

ग्रहारम्भ मुहूर्त
फरवरी–16,20, 24,26
गृह प्रवेश मुहूर्त
फरवरी– 25,27, 17,24,26
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
फरवरी– 16,19
मार्च–6,7,12,13
नामकरण संस्कार मुहूर्त
फरवरी–3,10,13,14,16,20
मार्च–2,3,4,6,7

सर्वार्थ सिद्ध योग

फरवरी	मार्च
17 ता. सू.उ. से 8–12	6 ता. सू.उ. से 32–20
20 ता. सू.उ. से 21 ता. सू.उ.	8 ता. 11–19 से सू.उ. तक
तक	12 ता. सू.उ. से 20–24
24 ता. 13–35 से सू.उ. तक	
25 ता. सू.उ. से 13–23	
27 ता. सू.उ. से 14–56	

16 मार्च - 15 अप्रैल

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- पूर्व निर्धारित सभी कार्य पूर्ण होते हुऐ नजर आऐंगे। संतान से शुभ समाचार प्राप्त होगा घर–परिवार में सुखद वातावरण रहेगा। सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। ज्यादा भाग–दौड़ से स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। स्त्री वर्ग से लाभ प्राप्त होगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– व्यापारिक यात्राऐं भाग्योदयकारी रहेंगी। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। किसी बड़े की सलाह आपके प्रयासों में आपको सफलता मिलेगी। कुटुम्बीजनों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है। वे वजह विवाद से बचें। बेकार के प्रलोभनों में न फँसे। जीवनसाथी से सभी मनमुटाव दूर होगें और प्रसन्नता का अनुभव करेगें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– सरकारी काम काज से सम्बन्धित कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने पड़ सकते है। उच्चाधिकारियों से मेलजोल बढ़ेगा। शत्रु मौके का फायदा उठाने के लिये तैयार है। महत्वपूर्ण लेन–देन व पूँजी निवेश सोच समझकर करें। विधार्थी वर्ग के लिये समय उचित है परीक्षा की तैयारी पूरे मनोयोग से करें।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– पैतृक सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा। दान धर्म में रुचि बढ़ेगी। किसी प्रिय वस्तु के खोने से मन व्यथित होगा। सरकार द्वारा सम्मान व पदोन्नति के सुअवसर प्राप्त होगें। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा। व्यापार सुचारु रुप से चलता रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– छोटी–बड़ी परेशानियों से आप घिरे रहेगें। गूढ़ रहस्यों को जानने की उत्कंठा बढ़ेगी। घरेलू खर्चो के बढ़ने से आपकी वित्तीय व्यवस्था पर असर पड़ेगा। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपके हित में रहेगा। अचानक धन लाभ से मन प्रसन्न रहेगा। विदेश यात्रा के प्रयास सफल होगें।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– स्वजनों के साथ व्यापार करने का निर्णय आपके पक्ष में नहीं रहेगा। गृहस्थ जीवन में तकरार होगी। कर्ज उतारने के लिये किसी वस्तु को गिरवी रखना पड़ सकता है। आलस्य का त्याग करे स्वास्थ्य पर ध्यान दें। अच्छी नौकरी मिलने का समय है। यात्राऐं लाभकारी सिद्ध होगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– उच्च शिक्षा का योग है। अनुसधानात्मक कार्यो में मन लगेगा। आपके शत्रु प्रबल होगे परंतु कर कुछ नही पाऐगें। प्राइवेट व सरकारी नौकरी आपका इंतजार कर रही है। अनेक असुविधाओं के वावजूद विजय आपकी होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– स्थान परिवर्तन का समय है। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। भाग्य में आ रहे अवरोध दूर होगें। प्रतियोगिताओं में सफलता मलेगी। नवीन योजनाओं में निवेश करना हितकर रहेगा। साहित्य कला में रुचि बढ़ेगी। अशोभनीय भाषा का प्रयोग न करें।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- साहस पराक्रम एवं पुरुषार्थ द्वारा कार्य सिद्धि होगी। रास्ते में आ रही बाधाओं को आप ठोकर मार कर आगे बढ़ जाऐगें। भविष्य में बचत की योजना लाभकारी सिद्ध होगी। जिम्मेदारियाँ बढ़ने के कारण स्वास्थ्य की अनदेखी न करें।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– कोई अच्छा मुनाफा मिलेगा, पुराने झगड़े–झंझटों से मुक्ति मिलेगी। निराशाजनक परिस्थितियों से बचें। निजी क्षेत्र से जुड़े जातको को अच्छे ऑफर आऐगें। प्रापर्टी का सुख मिलेगा। प्रेम प्रसंग व गलतफहमियों से दूर रहें।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- आलस्य का त्याग करे, समयानुसार कार्य पूर्ण होने पर प्रसन्नता होगी। अपने प्रयासों से आप दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करेगें। परिवार में धार्मिक आयोजन का लाभ मिलेगा। प्रयासरत रहने से शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - व्यापार में उथल–पुथल होगी। अधिकारियो से मेलजोल बढ़ेगा। किसी के दबाब में आकर निर्णय न लें। बाद–विवाद से अपने आपको बचाऐं। बढ़ते हुऐ जनसर्म्पक का फायदा उठाऐ। कानुनी विवाद खडे हो सकते है। मौजमस्ती मनोरंजन में समय व्यतीत करेगें।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंक विशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मार्च	अप्रैल
16 आंवला एकादशी व्रत	**1** मूर्ख दिवस, विश्व स्वास्थ्य दिवस
17 गोविन्द द्वादशी, प्रदोष व्रत	**4** नवरात्रा प्रारम्भ (प्रतिपदा),
19 पूर्णिमा होलिका दहन	**11** दुर्गाष्टमी व्रत
20 धुलैड़ी (बसंत उत्सव)	**12**.राम नवमी
22 श्री गणेश चतुर्थी व्रत	**14** कामदा एकादशी व्रत,
24 रंग पंचमी, एक नाथ षष्ठी	डॉ.भीम राव अम्बेड़कर जयंती
25 भानु सप्तमी पूजन	**15** प्रदोष व्रत, वमन द्वादशी
26 शीतलाष्टमी पूजन	महावीर स्वामी जयंती
30 पापमोचनी एका. व्रत	
31 प्रदोष व्रत	

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नहीं हैं।

गृह प्रवेश मुहूर्त
नहीं हैं।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
मार्च– 16,19,20
अप्रैल– 8, 11, 15

नामकरण संस्कार मुहूर्त
मार्च– 16,21,30
अप्रैल – 1, 3, 11

सर्वार्थ सिद्ध योग

मार्च	अप्रैल
20 ता. सू.उ. से 21 ता. सू.उ. तक	05 ता. सू.उ. से 19:58 तक
23 ता. 21–45 से सू.उ. तक	06 ता. 22:30 से सू.उ. तक
24 ता. सू.उ. से 20–44	
27 ता. 22–26 से सू.उ. तक	

वाणी-दोष

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा

मो. 9412263505

"जो अपनी और शत्रु की सामर्थ्य को नहीं जानता उसे शत्रु से अपमानित ही होना पड़ता है।"

एक बार की बात है हस्तिनापुर में विलास नाम का एक धोबी निवास करता था। उसका गधा अधिक बोझ ढोने के कारण दुबला हो गया था। धोबी ने उसे हृष्ट–पुष्ट बनाने के लिए सोचा– क्यों न मैं इसे शेर की खाल ओढ़ाकर खेत में छोड़ दूं– खेत के रखवाले डरकर पास नहीं आयेंगे और गधा खेत में चर कर हृष्ट–पुष्ट हो जायेगा। यह सोचकर धोबी शेर की खाल ले आया और गधे को पहना कर जंगल के पास वाले खेत में चरने के लिए छोड़ दिया। खेत के रखवाले दूर से देखते ही डर से उसे बाघ समझकर उसके पास न फटकते। गधा मजे से खेतों में चरता। धीरे–धीरे यह बात सारे हस्तिनापुर में फैल गई। कई किसानों ने तो खेतों पर जाना ही छोड़ दिया। इस तरह कुछ ही दिनों में गधा फिर से मोटा–सा ताजा हो गया। एक दिन किसान ने सोचा– यह बाघ यहां कहां से आने लगा। पहले तो यह कभी आता नहीं था। उसने एक काला कम्बल ओढ़ लिया और हाथ में तीर कमान लेकर खेत में एक तरफ एकान्त में छिपकर खड़ा हो गया। गधा धीरे–धीरे चरता हुआ उसके पास से निकला। उसने दूर से ही काले कम्बल में छिपे किसान को देखा तो मन में सोचा–जरुर यह कोई गधा है। यह सोकर गधा अपने स्वर में रेंकता हुआ किसान की ओर दौड़ा। किसान उसकी आवाज सुनकर समझ गया यह तो गधा है, फिर तो उसने सहज में ही उसे मार दिया। कथा सुनकर हिरण्यगर्भ नामक राजा हंस बोला, "इसलिए मैं कहता हूं कि अपने और दूसरे के बल को जानकर ही कुछ करना चाहिए।"

"आप ठीक कह रहे हैं–महाराज्!" दीर्घमुख बोला।

"फिर क्या हुआ...?" हिरण्यगर्भ बोला।

फिर पक्षियों ने कहा, "अरे पापी! दुष्ट कहीं के, तू हमारी ही भूमि में चुगकर हमारे ही स्वामी की निन्दा करता है। इसलिए अब तू क्षमा करने के योग्य भी नहीं रहा।"

इसके बाद सब मुझे चोंचों से मारकर क्रोध से बोले, "अरे मुर्ख! तेरा राजा तो इतना भोला है। वह अपनी रक्षा नहीं कर सकता, तो फिर राज्य की क्या करेगा। तू भी कितना मूर्ख है। कुएं के मेढ़क की तरह तुम अपने राज्य के अलावा किसी और राज्य के बारे मे जानते हो, फिर भी हमें अपने राजा की शरण में जाने को कहते हो। मूर्ख बगुले! हमेशा फल और छाया देने वाले पेड़ के आश्रय में रहना चाहिए, अगर दुर्भाग्य से फल नहीं मिला, तो उसकी छाया से कौन रोक सकता है? वैसे तो बड़ों का कहना है कि नीच जाति की सेवा में कुछ प्राप्त नहीं होता है, सहारा लेना है तो बड़ों का लो। शराब बेचने वालानीच जाति की भी लघुता को पाता है। हाथी का डील–डौल और वजन कितना ही ज्यादा हो, दर्पण में उसका प्रतिबिम्ब छोटा ही दिखता है। राजा के बली होने पर उसके बहाने सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं, जैसे चंद्रमा के बहाने खरगोश सुख से रहने लगे थे।"

उसकी बात सुनकर मैंने कहा, "यह कथा किस प्रकार है?"

"दुष्ट बगुले! सुनो, हम सुनाते हैं– पक्षी बोले।

छल

"बड़ों का नाम लेकर छल से भी काम सिद्ध हो जाता है।"

एक बार की बात है बारिश के समय (वर्षा ऋतु) में बारिश नहीं हुई थी। बारिश न होने पर पानी की कमी हो गयी। जंगल के जीव–जन्तुओं को प्यास बुझाने के लिए पानी मिलना मुश्किल हो गया। जंगल में रहने वाले हाथियों को भी पानी न मिला तो प्यास के मारे वे व्याकुल हो गये। बाद में वे झुण्ड बनाकर अपने स्वामी के पास जाकर बोले, "हे स्वामी! हम प्यासे मरे जा रहे हैं, नहानेके लिए भी पानी नहीं है। बिना नहाए तो हमारा जीना मुश्किल है। क्या करें, कहा जाएं, नहाने के लिए कोई सरोवर नहीं बचा।"

उनकी बात सुनकर हाथियों का स्वामी भी परेशान हो गया। उसने बहुत यत्न से सबको शान्त कराकर कहा, "आप सब लोग चिन्ता न करें। आप लोग मेरे साथ चलें। मैं आप लोगों को पास में एक सरोवर दिखाता हूं। वह इस जंगल में सबसे बड़ा सरोवर हैं। उसका पानी कभी भी समाप्त नहीं होता।"

इतना कहकर वह उन्हें पास ही एक निर्मल सरोवर के समीप

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 250/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 500/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के भारतीय स्टेट बैंक खाते में 10039621088, आगरा शाखा में जमा

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा
फोन : 0562–2856666, 2525262, 9719005262
ई मेल : maheshparasar@anushthan.in

ले जाकर बोला, "इस सरोवर से तुम सबका काम हो जायेगा।"

उस दिन के बाद सभी हाथी उस सरोवर पर नहाने के लिए जाने लगे।

सरोवर के किनारे खरगोशों का झुण्ड निवास करता था, हाथियों के आने–जाने से प्रतिदिन उनके पैरों से कुचलकर अनेक खरगोश मर जाते थे। हाथियों ने कभी इसकी चिन्ता नहीं करी, लेकिन खरेगोश उनका यह अत्याचार कब तक सहन कर सकते थे। सबने मिलकर एक सभा करी और अपने परिवारों की रक्षा का उपाय सोचने लगे।

सभा में बैठा शिलीमुख नाम का एक खरगोश बोला, "हाथियों का झुण्ड नहाने और प्यास बुझाने प्रतिदिन आयेगा। इस प्रकार तो हमारा कुल नष्ट हो जायेगा।"

सभा में से विजय नाम के एक बूढ़े खरगोश ने कहा, "चिन्ता मत करो, इसका कुछ उपाय मैं करुंगा।" वह प्रतिज्ञा करके सभा से चला गया। बाद में उसने सोचा–किसी तरह हाथियों के झुण्ड के पास जाकर बातचीत करनी चाहिए। वैसे भी हाथी छूते ही, सांप सूंघते ही, स्वामी रक्षा करते हुए और दुर्जन हँसते हुए मार डालता है। क्यों न मैं पहाड़ की चोटी पर चढ़कर झुण्ड के स्वामी से बात करुं।" अगले दिन उसने पहाड़ पर चढ़कर हाथियों के स्वामी से कहा, "महाराज! मैं विजय नाम का खरगोश हूं और भगवान चंद्रमा का सेवक हूं। उन्होने अपना दूत बनाकर आपके पास भेजा है।"

हाथियों के स्वामी ने कहा, "बोलो क्या बात है?"

विजय नाम का खरगोश प्रत्युत्तर में बोला, "राजन! मैं भगवान चन्द्रमा का दूत हूं। मैं कदापि नहीं बोलूंगा, क्योंकि मृत्यु का तो मुझे गम है नहीं। वैसे भी मारने के लिए शस्त्र उठाने पर दूत कभी अनुचित नहीं करता है। मैं उनकी आज्ञा से आपको उनका सन्देश देता हूं।" "चंद्र भगवान को मुझसे क्या काम आन पड़ा? उनका क्या सन्देश है? मुझे बताओं।" हाथियों का स्वामी स्वयं बोला।

"उन्होने कहा है कि आपने चन्द्रमा के सरोवर के रखवाले खरगोशों को मारकर अनुचित कार्य किया है। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मैं इनकी रक्षा करता हूं। मूर्ख, तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि खरगोशों की रक्षा करने के कारण ही मेरा नाम शशांक पड़ा है। मेरी आज्ञा है कि तुम सरोवर पर आना बन्द कर दो, क्योंकि इस तरह खरगोशों का नाश होता है।" खरगोश विजय ने भगवान चन्द्र के वचन सुना दिये। भगवान चन्द्र की आज्ञा सुनकर हाथियों का स्वामी भय से कांपते हुए बोला, "मुझे नहीं पता जो कुछ भी किया सब अनजाने में किया, फिर नहीं करुंगा–कृपया मुझे क्षमा करें।"

खरगोश बोला, "यदि ऐसा है तो आज रात में सरोवर पर जाकर भगवान चन्द्रमा को प्रणाम कर और उन्हें प्रसन्न करके चले जाओं।" खरगोश रात में हाथियों के स्वामी को सरोवर के किनारे ले गया और पानी में चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को दिखाकर बोला, "प्रणाम करके क्षमा मांग लो और जल्दी से चले जाओ। चद्र भगवान क्रोधित हो गये तो तुम्हारी खैर नहीं।"

हाथियों का स्वामी हाथ जोड़कर प्रणाम करता हुआ बोला, "हे प्रभु! मुझसे गलती हो गई, कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए। अनजाने में जो गलती कर बैठा, अब नहीं करुंगा।"

खरगोश बोला, "चन्द्र महराज! इसने भूल से ऐसा किया! अब क्षमा मांग ली है। इसे क्षमा कर दीजिए, फिर कभी नहीं करेगा।

यह कहकर हाथियों के स्वामी को विदा कर दिया।

पक्षी कथा सुनकर मैंने कहा, "हमारे राजहंस तो बहुत प्रतापी और अत्यन्त समर्थ हैं। उनमें तो तीनों लोकों की प्रभुता है, फिर यह राज्य क्या है?"

तब वे पक्षी बोले, "हे दुष्ट! फिर हमारी भूमि में क्यों बसता हैं?"

बाद में मुझे अपने राजा चित्रवर्ण के पास ले गए और प्रणाम करके कहा, "महाराज ध्यान देकर सुनिये! यह दुष्ट बगुला हमारे देश में बसता है आपकी निन्दा करता है।"

यह सुनकर स्वामी बोला, "यह कौन है और कहा से आया है?"

पक्षी बोले, "यह कर्पूर द्वीप के स्वामी हिरण्यगर्भ नामक राजहंस का अनुचर है।"

तब गिद्व मन्त्री बोला, "वहां मुख्य मन्त्री कौन है?"

मैंने कहा, " सब शास्त्रों ज्ञाता सर्वज्ञ नाम का चकवा है।"

मेरी बात सुनकर गिद्ध बोला, "ठीक है, वह स्वदेशी है। वैसे ही स्वदेशी कुल रीति से निपुण, धर्मशील, पवित्र, अर्थात् भ्रष्टाचारी नहीं होता, विचार करने में चतुर, व्यसनों में व्यभिचार से रहित होता है। स्वामी को मन्त्री उसे ही बनाना चाहिए, जो युद्धादि का ज्ञाता, कुलीन, विख्यात, विद्वान, धन बढ़ाने वाला हो।"

गिद्ध के बाद तोता बोला, "महाराज! कर्पूर द्वीप आदि छोटे–छोटे द्वीप जम्बू द्वीप के ही अन्तर्गत हैं। वहां भी आपका ही राज्य है।"

उसकी बात सुनकर स्वामी भी बोलें, "क्यों नहीं, स्वामी, पागल, मतवाली औरत और घमण्डी आदमी अप्राप्त वस्तु की भी कामना करते रहते हैं। जो वस्तु प्राप्त हो सकती है उसकी चर्चा ही क्या, उसे तो अवश्य प्राप्त करना चाहिए।"

यह सुनकर मैनें कहा, "यदि कहने भर से राज्य मिल जाता है तो जम्बू द्वीप में भी हमारे स्वामी हिरण्यगर्भ का राज्य होता।"

मेरी बात सुनकर राजा ने हसँकर कहा,"अपने स्वामी से जाकर कहो कि युद्ध की तैयारी करें।"

तब मैंनें कहा, "अन्य दूत को भेजिए।" राजा मेरी बात सुनकर बोला, "दूत बनकर कौन जायेगा? दूत इस तरह का होना चाहिए– जो स्वामिभक्त, कार्य में चतुर, बोलचाल में निपुण, व्यसनों से सहित, क्षमाशील, ब्राह्मण, शत्रु के भेद को जानने वाला और बुद्धिमान हो।"

स्वामी की बात सुनकर गिद्ध बोला, "दूत तो बहुत– से हैं, परन्तु ब्राह्मण को ही बनाना चाहिए, क्योंकि वह स्वामी को प्रसन्न करता है और सम्पत्ति को नहीं चाहता है। जिस प्रकार शंकर के कण्ठ में जाकर विष ने अपनी नीलिमा नहीं छोड़ी, उसी तरह ब्राह्मण अपने हाथों से अपना सदाचार नहीं जाने देता।"

स्वामी बोला, "तो फिर तोता ही दूत बनकर जाए। हे तोते! तू ही इसके साथ जाकर स्वामी को सन्देश देना।"

इस पर तोता बोला, "जो आज्ञा महाराज! पर यह बगुला दुष्ट है। इसके साथ नहीं जाऊंगा। कहा भी गया हे कि दुष्ट तो दुष्टता करता ही है, मगर संगति के कारण उसका फल सज्जन को भी भुगतना पड़ता है; जैसे सीता का हरण रावण ने किया था पर बांधा गया बेचारा समुद्र। दुष्ट के साथ न कभी रहना चाहिए और नकभी उसके साथ जाना चाहिए, क्योंकि कौए के साथ रहने से हंस और साथ जाने में बत्तख को प्राण गंवाने पड़ थे।"

स्वामी ने पूछा, वो कैसे?" तोता बोला, "मैं कहानी सुनाता हूं आप सुनिए.....।"

❋❋❋

शेष पेज 8 से आगे.....

शिवस्वरुप बनाने वाला है। यह समस्त पापों का नाश कर जीवों संसार के सम्पूर्ण सुख एवं मोक्ष देता है।

किस द्रव्य से अभिषेक करें– 'श्री' प्राप्ति हेतु गन्ने के रस से रुद्राभिषेक करना चाहिये।

2. स्त्रियों के तीनों दोषों (बंध्या, काकबंध्या, मृत्वत्सर को दूर करने हेतु दुग्ध से अभिषेक करने का विधान है।

3. ज्वारादि प्रकोप हेतु जलधारा से पूजन करें।

4. पाप से मुक्ति के लिये मधु से पूजन करना चाहियें।

5. व्यापार वृद्धि के लिये शुद्ध घी से अभिषेक करना चाहिये।

6. रुका धन वापसी के लिये घी, शहद से अभिषेक करे।।

7. शत्रुओं की शत्रुता दूर करने के लिये सरसों या तिल के तेल से अभिषेक करें।

8. रोग निवृत्ति के लिये जल, दूध व काले तिल से अभिषेक करना चाहिये।

9. कर्जमुक्ति के लिये पंचामृत से अभिषेक करें।

10. रोजगार प्राप्ति के लिये कच्चे दूध, केसर व मिश्री से अभिषेक करें।

11. संतान के लिये शर्करा से अभिषेक करना चाहिये।

मृत्युंजय साधना या रुद्राभिषेक दोनों ही मोक्ष और लंबी आयु देने वाले है। शिवलिंग के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु एवं ऊपर स्वयं भगवान शिव निवास करते है। देवी पार्वती और लिंग महादेव के रुप है। अतः लिंग का पूजन करने से त्रिदेवों और आदि शक्ति की पूजा स्वतः हो जाती है। अतः महाशिव रात्रि को व्रत एवं पूजन विधि–विधान से करने पर शिव कृपा की प्राप्ति होती है व मनोकामना की पूर्ति होती है। ❋ ❋ ❋

शेष पेज 10 से आगे.....

भुजी देवी का भी स्वरुप माना जाता है। यह सभी विघ्नों को दूर करके पूर्णायु देता है। अल्पायु व्यक्ति भी इसको धारण करके अरिष्ट से मुक्त हो जाता है। यह घाटा दुर्घटना आदि से छुटकारा दिलाने वाला है। जावालोपषिद में इसे गणेश बताया गया है।

नौ मुखी रुद्राक्ष – तांत्रिक शक्ति साधना एवं नव ग्रहों की शान्ति हेतु धारण होने वाला यह रुद्राक्ष पौराणिक शास्त्रों का प्रतीक माना गया है। यह नवदुर्गा की शक्ति का प्रतीक है। 9 मुखी रुद्राक्ष पर कल्याणकारी, सुख वैभव का दाता और दिव्य गुणों से युक्त माना गया है। सभी प्रकार के ऐश्वर्य को प्राप्त करने के लिए इसे धारण किया जाता है।

दसमुखी रुद्राक्ष – यह विष्णु का स्वरुप है। सभी कामनाओं को पूर्ण करने में सक्षम है। इसमें विष्णु भगवान के दशों अवतारों की शक्ति इसमें समाहित है। यह रोग शोक और भूत बॉधा निवारण करके व्यक्ति की समस्त कामनाओं की पूर्ति करता है। यह भूत पिशाच पिशाचिनी आदि की सिद्धि व मुक्ति में प्रयुक्त होता हैं यम नाम से सम्बोधित यह रुद्राक्ष दर्शन मात्र से शांति प्रदान करता है।

ग्यारह मुखी रुद्राक्ष –शिव कृपा से सम्पन्न यह रुद्राक्ष धारक में सम्मोहन आकर्षण एवं वृद्धि का प्रभाव देता है। इसे हनुमान का भी स्वरुप कहा जाता है। यह सभी में विजय दिलाने वाला एवं आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करने में सहायक है। यह वैराग्य, शान्ति एवं शीतल की प्राप्ति कराने वाला यह रुद्राक्ष पुराणों में वर्णित है। एका दश रुद्राक्ष दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण है।

बारह मुखी रुद्राक्ष – मार्तण्ड नाम से अभिहित सूर्यमानों का फल देने वाला यह बारहमुख वाला रुद्राक्ष अनेक दिव्य शक्तियों का अधिष्ठाता है। इसके यथा विधि प्रयोग द्वारा मनुष्य पारदर्शी एवं शून्यवत हल्का एवं दूरगामी हो जाता है। यह धारक को सूर्य के समान प्रकाशवान तेजस्वी सुविख्यात और लक्ष्मीवान् बनाता है। इसे धारण करने से धारक की ख्याति दूर दूर तक फैलती है। यह आदित्य स्वरुप है। यह नेत्र ज्योति बढ़ाता है। और वुद्धि तथा स्वास्थ्य प्रदान करता है।

तेरह मुखी रुद्राक्ष – यह देवराज इन्द्र का स्वरुप है। यह सौभाग्य व मंगलदायी है। तथा काम सिद्धि प्रदायक है। इस रुद्राक्ष के देवता कामदेव भी माने जाते है। यह सुख सौभाग्य की वृद्धि करके काम पर विजय और रस रसायन की सिद्धि प्रदान करता है। विश्व देव नामक यह रुद्राक्ष यशस्वी बनाने में सहायक है। तथा विश्व यात्रा में सफलता प्रदान करने वाला यह एक परम श्रेष्ठ आर्श्चयजनक रुद्राक्ष है।

चौदह मुखी रुद्राक्ष – सर्वज्ञ नाम से सम्बोधित, सर्वपाप नाशक, सर्व विद्या प्रदाता, वंशोद्वारक एवं विश्व कल्याण प्रद है। इस रुद्राक्ष में अनंत गुण है। इसको गले में धारण करने से बहुत मान सम्मान मिलता हैं। तथा मनुष्य देवता सदृश्य हो जाता है। यह अत्यन्त दुर्लभ रुद्राक्ष परम शिव स्वरुप है। सभी देवताओं की कृपा धारक पर रहती है। यह सर्व पापहारी एवं परमपद दाता है।

गौरी शंकर रुद्राक्ष – यह रुद्राक्ष शिव पार्वती स्वरुप प्राकृतिक रुप से वृक्ष पर जुड़ा हुआ उत्पन्न होता है। यह रुद्राक्ष मनो वांछित फल एवं ऋद्धि सिद्धि के लिए जाना जाता है। इसके धारण करने से शिव पार्वती सदैव प्रसन्न रहते है। मान्यता है कि जिस घर पर गौरी शंकर रुद्राक्ष की पूजा होती है। वहाँ किसी प्रकार की भी कमी नहीं रहती।

गणेश रुद्राक्ष – यह रुद्राक्ष ऋद्धि–सिद्धि का दाता है। यह जिसके पास आ जाता है। उसके भाग्य को चमका देता है। इसकी विशेषता है कि यह व्यक्ति को धन से समृद्ध बना देता है।

रुद्राक्ष की महामाया से कौन अप्ररिचित है। रुद्राक्ष को सामान्यतः शिव का रुप माना जाता है कहावत है कि जिसने इसे गले लगाया, निश्चित उसने कष्टों से छुटकारा पाया।

प्रत्येक मुखी रुद्राक्ष को धारण करने के भिन्न–भिन्न मंत्र है। फिर भी "ऊँ नमों शिवाय" के साथ सभी रुद्राक्ष धारण किये जा सकते है। रुद्राक्ष भगवान शिव की पूजा का फल प्रदान करता है।

वर्तमान समय में प्रत्यक्ष देखा जा रहा है कि व्यक्ति हृदय रोग रक्तचाप व असाध्य रोगों को नष्ट करने के लिए रुद्राक्ष धारण करते है। और रोगों का नाश भी होता है। अन्ततः मन में आस्था एवं विश्वास रखते हुए रुद्राक्ष धारण करें, भगवान शिव आपका कल्याण अवश्य करेंगे। ❋ ❋ ❋

शेष पेज 11 **से आगे.....**

होंगे। अगर आप नयी प्रोंपटी खरीदने या मकान बनवाने रहे हैं, तो खुश होने के लिए आपके पास पर्याप्त कारण है। अतिरिक्त प्रयास न करें, क्योंकि ईश्वरीय हाथ आपकी सहायता हैं।

ज्योतिषीय सलाह – मुर्गी को दाना खिलायें। भगवान गणेश की पूजा करें। अपने नौकरों को उचित भुगतान करें।

वृश्चिक – इस वर्ष यात्राओं से जुड़ी समस्याओं को नही नकारा जा सकता है, कम–से–कम साल के शुरुआती छः महीनों में आपको इन यात्राओं को टालना पड़ेगा। जुलाई के बाद ही यात्राओं से सकारात्मक परिणाम प्राप्त होगा। विवाहेतर संबंध आपकी प्रतिष्ठा को धूमिल करेगें शाकाहारी बनना व धार्मिक स्त्रोतों और मंत्रो को जपना ख्याति को बढ़ाएगा।

ज्योतिषीय सलाह – किसी भी रुप में शराब का सेवन न करें। अनैतिक रिश्तों से दूर रहें। यात्रा का भार अपने सिर पर न उठायें।

धनु – अगर आप बिजली का खराब सामान घर में रखेंगे, तो आप कानूनी पचड़ों में फँस सकते हैं। वाहन चलाते समय भी अतिरिक्त सावधानी की जरुरत है। इस साल नैतिक मूल्यों का दृढ़ता से पालन करें। तरक्की तभी संभव है जब आप पूरी तरह से करेंगे, यानी मांसाहार, शराब और अनैतिक संबंधों से दूर रहें। यह सब आपकी छवि को नुकसान ही पहुँचायेगें।

ज्योतिषीय सलाह – नीले कपड़े न पहलें। वाहन चलाते समय सुरक्षा–नियमों का पालन करें। गले में लाल रंग का लम्बा धागा धारण करें।

मकर – जुलाई 2011 तक आय में कमी और खर्चो में इजाफे का सिलसिला चलता रहेगा। इसके बाद परिस्थितियों में सुधार होगा। हालात अच्छे बनाये रखने के लिये आपको माँ दुर्गा और माँ सरस्वती की पूजा करनी चाहिये। अपनी बेटी और बहनों को खुश रखने की कोशिश करें। जून के बाद किये अपने सभी वादों को जरुर पूरा करें।

ज्योतिषीय सलाह – प्रतिदिन माँ दुर्गा की आराधना करें। अपनी योजनाओं का खुलासा दूसरों के सामने न करे। शनि का दान करें।

कुंभ – शनि की स्थिति आपको संकेत दे रही है कि आप वाहन चलाते समय अतिरिक्त सावधानी बरतें। साथ ही सड़क पर ... वाहनों से भी बचकर चलें। अपने नाम से घर बनाने के लिये यह उपयुक्त समय नहीं है। आर्थिक दृष्टि से यह समय बहुत अच्छा नही हैं इसलिये शेयर बाजार में अत्यधिक निवेश करने से बचें। पिता या घर के किसी अन्य बड़े सदस्य का स्वास्थ्य इस साल बिगड़ सकता है।

ज्योतिषीय सलाह – सावधानी से गाड़ी चलायें। गले में चाँदी की चेन धारण करें। बिजली के खराब उपकरण घर में न रखें।

मीन – स्वास्थ्य की दृष्टि यह साल आपके लिये बहुत अच्छा नही है, खासकर अगर आपके परिवार में आनुवांशिक तौर पर डायबिटीज होती है तो इस साल आप नियमित तौर पर शारीरिक क्रियाकलाप और योग अधिक करें। व्यायाम नियमित रुप से करें काफी फायदा होगा। किसी का मजाक उड़ाने से बचें, क्योंकि इससे आपके और आपके किसी प्रिय के बीच दरार आ सकती है, जरुरी कागज पर हस्ताक्षर करने से पहले उसे अच्छी तरह से अवश्य पढ़ लें।

ज्योतिषीय सलाह – कामयाबी के लिये दुनियादारी की समझ बढ़ायें। सबके साथ अच्छे रिश्ते बनायें रखें। स्वयं अपनी तारीफ न करें।

❋ ❋ ❋

शेष पेज 12 **से आगे.....**

इनके कारण बुरे स्वप्न, व्यर्थ की चिंता, कलह व रोग आदि होते हैं। शयन कक्ष में बैठकर नशीले पदार्थो का सेवन नहीं करना चाहिए । इनसे स्वास्थ्य, व्यापार, धन आदि पर बुरा प्रभाव पडता हैं । हमेशा किसी न किसी बात की कमी लगी ही रहती हैं ।

7. शयन कक्ष में रंग का चयन अपनी राशि, लग्न और द्वादश भाव में जो भी बलवान ग्रह हो उसके अनुसार करें तो प्रायः शुभ होगा परन्तु एकदम काला या लाल रंग न हो तो शुभ होता हैं । शयनकक्ष में पूर्वजों की तस्वीरे नहीं होनी चाहिए। यहां केवल सौम्य प्रतिमा या कृत्रिम फूल पत्तियों का होना सुखद एवं भ्रांतिपूर्ण निद्रा का परिचायक हैं ।

शयन कक्ष के निर्माण के सम्बन्ध में यदि हम उपरोक्त वर्णित वास्तुशास्त्र के नियमों का पालन करें तो निश्चित ही हमारे जीवन में सुख और शान्ति का सुखद वातावरण बना रहेगा ।

❋ ❋ ❋

शेष पेज 12 **से आगे.....**

की अष्टमी **पर्यत** आठ दिन तक होलाष्ट के रुप में मनाया जाता है और पूर्णिमा को संपन्न होता है इस दिन गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य दक्षिणा, गन्ना, बूट फलों, और गेहूँ चने और जो की बालों का भूजने का भी विधान है कुछ श्रद्धालु होली की अग्नि से घर में बनाई होली को जलाते है, तो कुछ होली की भस्म ले जाते है।

❋ ❋ ❋

शेष पेज 13 **से आगे.....**

आयाम बनायें, चिकित्सा अध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण बनाने की आवश्यकता है। स्वयं की चेतना–परम चेतना अर्थात परमात्मा के चरणों में समर्पित कर, अच्छे नियम, अच्छा व्यवहार, सेवा परोपकार के द्वारा आंसू भरी आँखों में आशा का संचार करना सच्ची आध्यात्मिकता है।

बुजुर्गो के देखभाल के लिए ऐसे स्थन की आवश्यकता है, जहाँ पर चिकित्सा, अध्यात्म ज्ञान, मनोरंजन, योग आदि की उचित व्यवस्था हो, व्यक्ति आज युवा है कल वृद्ध अवश्य ही होगा, क्या कभी स्वस्थ युवा व्यक्ति लाचार व्यक्ति की समस्याओं को पहचाने, अगर नही तो स्वयं बिमार आदि कठिन परिस्थियोंमें अवश्य सोचें। सरकार व सामाजिक संस्थाए बुजुर्गो हेतु अच्छी सेवा कर रही है लेकिन उसमें और भी सुधार की आवश्यकता है। रोम्स पियर ने कहा है कि डूबते सूरज के लिए लोग दरवाजे बन्द कर लेते है। लेकिन हमें जीवन में सर्वागींण विकास करना है तो डूबते सूरज को प्रणाम करने की आवश्यकता है। बुजुर्गो की उचित देखरेख के साथ सम्मान देने की और उनके अनुभव प्राप्त करने की आवश्यकता है। (जयहिन्द)

❋ ❋ ❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृह्मजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262